भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 9 | अंक 04 | उदयपुर शुक्रवार 01 मार्च 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रु.

अंग-अंग के सुखमय सुन्दर भूषण बनते आभूषण

- डॉ. शरदसिंह -

''आभूषण लोकसंस्कृति के लोकमान्य अंग हैं। सौंदर्य की बाहरी चमक-दमक से लेकर शील की भीतरी गुणवत्ता तक और व्यक्ति की वैयक्तिक रूचि से लेकर समाज की सांस्कृतिक चेतना तक आभूषणों का प्रभाव व्याप्त रहा है। आभूषणों के उपयोग का प्रभाव तन और मन दोनों पर पड़ता है। उनके धारण करने से शरीर का सौंदर्य ही नहीं वरन् स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता है। सौंदर्य-बोध में उचित समय पर उचित आभूषण पहनने का ज्ञान सम्मिलित है। आभूषणों का चयन जानकारों द्वारा शरीर-विज्ञान के आधार पर ही किया गया है।''

साहित्य शास्त्रियों ने आभूषणों के भेदोपभेदों का विशद वर्णन किया है। भरत ने अपनी काव्यशास्त्रीय कृति 'नाट्य शास्त्र' में चार प्रकार के आभूषणों का उल्लेख किया है-

(1) आवेध्य - जो छिद्र द्वारा पहने जाएं, जैसे कर्णफूल, बाली आदि।
(2) बन्धनीयम - जो बान्धकर पहने जाएं, जैसे बाजूबंद, पहुंची, शीशफूल आदि।
(3) प्रक्षेत्य - जिनमें कोई अंग डाल कर पहने जाएं, जैसे कड़ा, चूड़ी, मुंदरी।
(4) आरोप्य - जो किसी अंग में लटका कर पहने जाएं, जैसे हार, कण्ठमाला, चम्पाकली आदि।

आभूषण पहनने के पीछे वैज्ञानिक कारण महिला का श्रृंगार माथे की बिंदी से लेकर पांव

में पहनी जाने वाली बिछिया तक होता है। इनमें हरएक चीज का अपना वैज्ञानिक महत्व है। इनको पहनने से शरीर पर सीधे रूप से

सकारात्मक प्रभाव होता है। हिन्दू महिलाओं में अंगुलियों में अंगूठियां, हाथों में चूड़ियां, पैरों में पायजेब, नाक में लौंग, गले में मंगलसूत्र आदि पहनना कई लोगों को फैशन से ज्यादा और कुछ नहीं लगता होगा लेकिन अनेक विद्वानों का मानना है कि अंगूठी, माला, चूड़ियां, लौंग और पायजेब आदि के पीछे आर्थिक के साथ वैज्ञानिक कारण भी रहते हैं। जैसे मांग में टीका पहनने से

मस्तिष्क सम्बन्धी क्रियाएं नियंत्रित तथा संतुलित रहती हैं एवं मस्तिष्क का विकार नष्ट होता है।

प्रचलित मान्यता के अनुसार कानों में झुमके, बालियां आदि पहनना फैशन ही नहीं, बल्कि शरीर पर एक्यूपंचर की तरह प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क के दोनों भागों को विद्युत से प्रभावशाली बनाने के लिए नाक और कान को छिदवाकर उसमें कोई भी धातु धारण करनी चाहिए। कान में

कोई भी धातु धारण करने से मासिक धर्म नियमित होने में मदद मिलती है।

हिस्टीरिया व हर्निया नियंत्रित रहता लाभ कराता है। नाक छिदवाकर नथुनी या लौंग धारण करने से नासिका सम्बन्धी रोग जैसे कि श्वांस सम्बन्धी समस्या, सर्दी, खांसी में राहत मिलती है। शरीर को ऊर्जावान बनाने के लिए सोने के ईयररिंग और ज्यादा ऊर्जा को कम करने के लिए चांदी के ईयररिंग्स पहनने की सलाह दी जाती है।

विवाहित स्त्रियों का कांच की चूड़ियां पहनना शुभ माना जाता है। कांच में सात्विक और चैतन्य अंश मुख्य होते हैं। इस वजह से चूड़ियों के आपस में खनखनाने से जो आवाज पैदा होती है वह नकारात्मक ऊर्जा को दूर भगाती है।

हर अंगुली में अंगूठी का अलग-अलग

प्रभाव होता है। हाथ की सबसे छोटी अंगुली में अंगूठी पहनने से छाती के दर्द व घबराहट से रक्षा होती है। इसके अलावा ज्वर, कफ, दम आदि बीमारियों से राहत मिलती है।

चांदी की पायजेब पहनने से पीठ, एड़ी, घुटनों के दर्द और हिस्टीरिया आदि रोगों से राहत मिलती है। चांदी की पायल हमेशा पैरों से लगी रहती है जो स्त्रियों की हड्डियों के लिए काफी फायदेमंद है। इससे उनके पैरों की हड्डी को मजबूती मिलती है। इसके अलावा पायल से उत्पन्न आवाज की तरंगें वातावरण से जब मिलती हैं तो वह स्त्री को नकारात्मक ऊर्जा से बचाती है।

पायल और कड़े धारण करने से एड़ी, टखनों और पीठ के निचले भाग में दर्द नहीं होता। कमर में करधनी धारण करने से कमर में होने वाले दर्द से छुटकारा मिलता है। पहले भूमि पर बैठकर अनाज पीसने के लिए चक्की चलानी पड़ती थी, उस स्थिति में कमर पर बंधी करधनी मांसपेशियों में संतुलन बनाए रखती थी।

पैर की जिन ऊंगलियों में बिछिया पहनी जाती है उसका सम्पर्क गर्भाशय और दिल से रहता है जो रक्तचाप को नियंत्रित रखती है। आमतौर पर बिछिया चांदी की होने की वजह से जमीन से जो ऊर्जा ग्रहण करती है वह पूरे शरीर तक पहुंचाती है जो स्त्री के भीतर ऊर्जा को उत्पन्न करती है। पायजेब की तरह ही चांदी की बिछिया भी स्त्री को हर प्रकार के नकारात्मक प्रभाव से दूर रखती है। चूड़ी कलाई की त्वचा से घर्षण करके हाथों में रक्त संचार बढ़ाती है। यह घर्षण ऊर्जा भी पैदा करता है थकान को जल्दी हावी नहीं होने देता। कलाई में गहने पहनने से श्वांस तथा हृदय रोग की सम्भावना घटती है।

चूड़ी मानसिक संतुलन बनाने में सहायक होती है।

आभूषण लोकसंस्कृति के लोकमान्य अंग हैं। सौंदर्य की बाहरी चमक-दमक से लेकर शील की भीतरी गुणवत्ता तक और व्यक्ति की वैयक्तिक रूचि से लेकर समाज की सांस्कृतिक चेतना तक आभूषणों का प्रभाव व्याप्त रहा है। आभूषणों के उपयोग का प्रभाव तन और मन दोनों

पर पड़ता है। उनके धारण करने से शरीर का सौंदर्य ही नहीं वरन् स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता था। सौंदर्य-बोध में उचित समय पर उचित आभूषण पहनने का ज्ञान सम्मिलित है। आभूषणों का चयन शरीर-विज्ञान के आधार पर ही किया गया है।

क़मर मेवाड़ी के नाम साहित्यकारों के पत्र (3)

शब्द रंजन के 15 फरवरी 2024 के अंक में आप पढ़ चुके हैं, क़मर मेवाड़ी के नाम साहित्यकारों के पत्रों में विष्णु प्रभाकर, आलमशाह खान, अरूण कमल, अभिनव ओझा, नवलकिशोर, अनवर सुहैल तथा ओंकारश्री के पत्र। यहां पढ़िये अन्य साहित्यकारों के पत्र -

(1)

असगर वजाहत का दिल्ली से लिखा दिनांक 02 जून 1993 का यह पत्र -

प्रिय भाई,

आपके दो पत्र मिले। मैं दिल्ली में न था। नहीं तो जवाब क्यों न देता। इससे पहले यदि आपने जामिया कालिज के पते पर खत डाले हों तो निश्चित रूप से नहीं मिले क्योंकि मैं वहां से छुट्टी पर हूं।

आपको तो मालूम ही है कि साल में दो-तीन कहानियां ही हो पाती हैं। इधर पिछले छह महीने में जो दो कहानियां लिखी हैं। उसमें से एक 'कथा प्रतिमान' और दूसरी 'उत्तरगाथा' में छप रही है। नयी कहानी आपको ही भेजूंगा। और कैसे हैं?

आशा है, पत्र के उत्तर न मिलने वाली बात स्पष्ट हो गयी है। आप जैसे मित्रों को उत्तर न दूंगा तो किसे दूंगा।

आपका
असगर वजाहत

(2)

मणि मधुकर का 02 मार्च, 1984 को दिल्ली से लिखा यह पत्र -

प्रिय भाई

'सम्बोधन' मिला। आपकी कविताएं पढ़ कर लगा कि कोई तो ऐसा है जो इस तरह लिख रहा है। बेहद उम्दा और धारदार। इतनी ताजगी, इतनी साफगोई और दिलेरी आज दुर्लभ होती जा रही है। आपके भीतर की दुनिया बाहर की चीजों से जुड़ कर बहुत बड़ी और आत्मीय बन गयी है लेकिन एक बात सिर्फ मैं जानता हूं- सिर्फ मैं, कि ऐसी कविताएं क़मर मेवाड़ी ही लिख सकता है- क्योंकि मैंने देखा है कि यह क़मर मेवाड़ी नाम का कद्दावर व्यक्ति केवल अपनी कविताओं के साथ जिन्दा है- एक-एक शब्द और बुनावट के एक-एक रेशे में पूरी तरह खुल कर सांस लेता हुआ। यह सांस लेना, इस तरह यातना और संघर्ष के दौर में एक बेबाक ऊंचाई पर जीना और दूसरे को जिन्दगी की सार्थकता तक पहुंचाना- मेरे दोस्त को हमेशा नसीब हो, यही मानता हूं। प्यार के साथ-

भाई
मणि मधुकर

(3)

श्री मधुकर का दिनांक 12 फरवरी, 1992, नई दिल्ली से लिखा यह पत्र -

प्रिय भाई

बरसों से आपने एक ऐसे शख्स को अपना दोस्त मान रखा है, जो शायद आपसे दोस्ती के काबिल ही नहीं है। लानत भेजिये उसे। कुछ लोगों को जिन्दगी में सिर्फ बर्दाश्त करना होता है। आपने मुझे झेला है, तो झेलते रहिये।

यह व्यक्त कर पाना मेरे लिए कठिन है कि जब आपका खत मिलता है, कितनी खुशी होती है लेकिन जवाब नहीं दे पाता हूं। अलबत्ता नये सिरे से आपके पत्र का इन्तजार करने लगता हूं। प्यार के साथ-

भाई
मणि मधुकर

आचार्य निरंजननाथ सम्मान समिति के अध्यक्ष कर्नल देशबंधु आचार्य समारोह में उपस्थित साहित्यकारों एवं प्रबुद्धजनों का स्वागत एवं आभार प्रकट करते हुए।

(4)

हेतु भारद्वाज का नीमकाथाना से लिखा दिनांक 10 दिसम्बर 1997 का यह पत्र -

प्रिय भाई

कल 'सम्बोधन' का नया अंक मिला। विष्णुचन्द्र शर्मा तथा स्वयं प्रकाश के आलेख एवं नन्दबाबू का साक्षात्कार पढ़ गया। ये सभी बहुत प्रभावशाली लगे। विष्णुजी की मार बहुत सटीक है तथा स्वयं प्रकाश ने भी शायद पहलीबार मुखर होकर सभी बातें कही हैं। यह लेख चर्चा का केन्द्र बनना चाहिए। आप चाहें तो एक अंक दलित साहित्य की अवधारणा को लेकर निकाल सकते हैं क्योंकि जिस तरह जाति के आधार पर लेखन से तकसीम किया जा रहा है और संवेदना को ही जाति के सन्दर्भ में रखकर परखा जा रहा है, वह साहित्य के लिए बहुत घातक है। आश्चर्य तो यह है कि इस खेल में बड़े-बड़े पुरोधा भी शामिल हैं। और आगे पढ़कर लिखूंगा। अंक पर मेरी बधाई।

एक प्रति इस पते पर भी भेजें तथा उनसे सहयोग मांगें।

डॉ. रमेश रावत, जे-57, ज्ञानसरोवर, रामघाट रोड़, अलीगढ़, उ.प्र.

एक प्रति डॉ. कैयाज अलीखां, पुराना शहर किशनगढ़ (अजमेर) को भेजें, वे प्रसन्न होंगे।

आपका
हेतु भारद्वाज

(5)

हरिपाल त्यागी का नोएडा से लिखा दिनांक 19 दिसम्बर 2007 का यह पत्र -

डियर क़मर मेवाड़ी साहब,

'सम्बोधन' पूरा पढ़ा। पढ़ते हुए लगा कि अदब की छतरी के नीचे अपने एक विशाल परिवार के बीच में हूं। मुश्किलात तो आपके सामने आई ही होंगी, लेकिन यह अच्छा काम हुआ है।

लघु पत्रिकाओं के सम्मेलन में थोड़ी देर के लिए गया तो था लेकिन आमंत्रित नहीं था। गया इसलिए था कि अपनी शक्ल सूरत के किसी आदमी के हाथ थाम कर पूछूंगा कि भाई, आप कहीं क़मर मेवाड़ी तो नहीं हैं?

संस्मरण विशेषांक में ज्यादातर रचनाएं अच्छे स्तर की हैं। विष्णुचन्द्र शर्मा से शुरू करके वेद व्यास तक की यात्रा में कुछेक ऐसे रचनाकारों ने भी ध्यान खींचा जो मेरे लिए नये हैं- हुस्न तबस्सुम 'निहां', अभिज्ञात, प्रेमकुमार, शकील सिद्दीकी और नीलम कुलश्रेष्ठ वगैरह। मनोहरश्याम जोशी ने भाषा के यथास्थितिवाद को तोड़ा है जबकि राजेन्द्रजी ने कभी कोई जोखिम नहीं उठाया। विश्वनाथ त्रिपाठी का संस्मरण, असल में, उप संस्मरण ज्यादा है। असगर वजाहत, काशीनाथ सिंह, नासिराजी और महेश दर्पण की भाषा का मैं मुरीद हूं। वेद व्यास के विचार मन छूते हैं। विजय के तीन छोटे-छोटे संस्मरण याद रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ-

आपका
हरिपाल त्यागी

(6)

हरमन चौहान का जावरमाइंस से 18 जून 1994 का लिखा यह पत्र -

प्रिय कवि सम्राट क़मरजी

आदाब

कार्ड कल शाम को ही मिला। जिस प्रकार एक सम्राट दूसरे सम्राट के साथ जो व्यवहार करता है, उसी तरह लेखक भी लेखक के साथ वैसा ही करता है और लोग धड़ल्ले से ऐसा कर भी रहे हैं लेकिन भाई मुझे विश्वास है- तुमने न तो कभी ऐसा किया है और न करोगे। मुझे भाई से भाई का बस प्यार चाहिये जो मिल रहा है, मिलता रहेगा।

तुम्हें भी रचना छापने की अनुमति चाहिये? पहले बड़े प्रकाशक बनो, फिर गुलशन नन्दा की तरह एडवांस लेकर उपन्यास के लिए मिलने को सताऊं। अभी तो जो छापना हो, भाई छाप लो न! व्यंग्य मत मारो। अब भाई नरेन्द्र के साथ कब मिल रहे हो, लिखना। दोनों ही इतने बेमुरव्वत कैसे हो गये हो यारों? उदयपुर ही बुलाओ पर बुलाओ तो सही? भाई स्वयं प्रकाश से दरीबा खबर-वभर लेते हो क्या? वह आजकल प्रकाशकों को लूटने में लगा है। मंगल तक मेरी कोई स्लीप लेकर आएगा। उसके साथ मार्बल का बेलन-चकलोटा भेजना न भूलें, श्रीमती भूली नहीं है। मित्रों को नमस्कार।

आपका ही
हरमन चौहान

(7)

श्री चौहान का उदयपुर से लिखा 24 फरवरी 2005 का यह पत्र-

आदरणीय भाई क़मरजी

यार, अगर पूरी पत्रिका का सौन्दर्य प्रसाधन से लेकर नख-शिख वर्णन चाहिए तो दूरभाष से सूचित करो। मैं जानता हूं, तुम छापोगे नहीं। मेरी रचनाएं दूर-दराज छपेंगी, यहां घटिया रचनाएं नहीं छापते हो। सावित्री परमार का चित्र मुखपृष्ठ पर क्यों छापोगे? अजीत कौर ही मिली क्या? सठिया गये हो। बहुत खूब।

प्रतिक्रिया -

आचार्य निरंजननाथ सम्मान की शुरूआत के शुभ अवसर पर हिंदी के प्रख्यात कहानीकार स्वयं प्रकाश और संयोजक क़मर मेवाड़ी आचार्य साहब की तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए।

''कम्बख्त पोस्टमेन छुट्टी पर गया हुआ और डाक पन्द्रह दिनों बाद जब वह आया, तब लाया। पत्रिका अब मुझे मिल गई है। भेजने की जरूरत नहीं है। फोन लगा नहीं। अब तो पढ़ भी ली है। नया कलेवर पसन्द आया। नयी प्रकार की सामग्री आपने देकर नए ज्ञान का भास्कर उजागर किया है। आपको साहित्य जगत में कम-से-कम लघु पत्रिकाओं में तो याद करा ही जाएगा। आपने तो अब इस पत्रिका के तेवर ही बदल दिये हैं। इसके लिए आपको बधाई।''

आग्रह -

हिंदी के ख्यात व्यंग्य लेखक हरमन चौहान को प्रथम आचार्य निरंजननाथ सम्मान एवं पुरस्कार राशि भेंट करते समारोह के मुख्य अतिथि वेद व्यास।

मेरी प्रतिक्रिया छापनी है तो बिना काट-छांट के छापना है तो तुरन्त सूचित करो। एक लेखक और एक सम्पादक किसी एक पर ही आश्रित नहीं रहता है। लेखक का लेखन और पत्रिका का सम्पादन एक तरफ और यारों की यारी एक तरफ। मुझे दूसरा मंटो समझो जिसने मंटो जैसी कोई रचना इस पत्रिका को नहीं दी। जो भी भेजी कचरे में डाल दी। इन्तजार बेसब्री से बस कयामत तक? पैमाने को सलाम करो, जिसने तुम्हें बुलन्दी पर पहुंचाया।

तुम्हारा
हरमन चौहान

(8)

असद ज़ैदी का गुरगांव से लिखा यह पत्र -

किबली,

'सम्बोधन' के दो अंक मिले। शुक्रिया। उम्मीद है खुश और तन्दुरस्त होंगे। पाठकों के पत्र पढ़कर लगा कि संस्मरण अंक बड़ा पठनीय है। एक कॉपी हो सके तो भेज दें। मैं अपना ताजा संग्रह (करीब 20 साल बाद छपा है) 'सामान की तलाश' भिजवा रहा हूं- आपको अवलोकनार्थ, मनोरंजनार्थ।

उस्मान की कुछ खबर कभी ले लिया कीजे। पता नहीं क्यों मुझे उसकी बर्बादी अपनी बर्बादी मालूम होती है। बाकी फिर-

आपका
असद ज़ैदी

(9)

राजेश जोशी का भोपाल से लिखा दिनांक 18 अप्रेल 1983 का यह पत्र -

प्रिय भाई,

आपका पत्र मिला। इधर लगातार व्यस्त रहा। आपका पत्र भी मेरे पुराने पते पर भेजा गया था अत: देर से प्राप्त हो पाया। कृपया मेरा नया पता नोट करलें। जल्दी ही कुछ लिखूंगा तो आपको अवश्य भेजूंगा। सम्बोधन को नये रूप में अर्थात् प्रगतिशील ले. सं राजस्थान की पत्रिका के रूप में देखने की तीव्र इच्छा है। अंक कब तक आयेगा। अंक अवश्य भेजें। पत्र व्यवहार बनाये रखेंगे। ऐसी आशा है। स्वस्थ प्रसन्न होंगे।

आपका
राजेश जोशी

श्री हरिनारायण व्यास आजकल भोपाल ही हैं तथा प्रगतिशील लेखक संघ की प्रांतीय कार्यकारिणी में हैं। उनका पता है- हरिनारायण व्यास : द्वारा वागर्थ, भारत भवन, श्यामला हिल, भोपाल (म. प्र.), उनसे भी कविता आप ले सकते हैं।

(10)

राजेन्द्र यादव का नई दिल्ली से लिखा दिनांक 03 मई 2005 का यह पत्र -

प्रिय क़मर भाई,

चालीसवें वर्ष के सम्बोधन के लिए मेरी हार्दिक बधाइयां। आप नया अंक महिलाओं पर केन्द्रित कर रहे हैं, यह शुभ बात है। चालीस वर्ष की महिलाओं से कोई खास खतरा भी नहीं होता।

आपने यह नहीं बताया कि मुझे इसमें क्या करना है? नया तो नहीं लिख पाऊंगा। हां, पिछले वर्ष 'बेजुबानी जुबान हो जाये' शीर्षक से सम्पादकीय लिखा था। उसे कुछ संशोधित करके अपनी एक पुस्तक में दूंगा। मेरा खयाल है लेख शायद ठीकठाक है। अगर आप चाहें तो प्रति भेज दूं? और बताएं। अंक कब तक आएगा? आप जैसे जिद्दी और अड़ियल आदमी के लिए मेरी हर तरह की शुभ कामनाएं।

आपका
राजेन्द्र यादव

(11)

रवीन्द्र राजहंस का पटना से लिखा दिनांक 28 फरवरी 1997 का यह पत्र-

प्रिय भाई,

हिन्दी की लघु पत्रिकाओं पर एक राष्ट्रीय दैनिक पत्र के लिए अंग्रेजी में आलेख तैयार कर रहा हूं। कृपया इस हेतु अपनी पत्रिका का एक ताजा अंक भेज कर कृतार्थ करें।

आपका
रवीन्द्र राजहंस

अजब-गजब

सदैव लिखते रहने का प्रसाद

हिन्दी प्राध्यापिका डॉ. सुधा गुप्ता पहलीबार मुझे लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की गादी पर ले गई। उदयपुर में मेरी भानजी के निवास पर पूरा हॉल श्रद्धालुओं से भरा हुआ था। मैं अन्त में जाकर सबके पीछे बैठ गया। इतने में कल्लाजी के भाव में सरजुदासजी वैष्णव ने इशारा कर मुझे बुलाया। मैं उनके सम्मुख नतमस्तक किये बैठ गया। उनकी आंखें तेजी लिए अपलक थीं और एक पांव अनवरत हिल रहा था। हाथ में तलवार थी।

मुझे अपने हाथ से अमल पानी पिलाया। पीठ पर दो बार तलवार का आवाज देता झटका दिया। अपनी 'समस्या' तथा 'चाह' के लिए पूछा। मैंने 'न कोई समस्या और न कोई चाहना' कहा। फिर देवता बोले, 'तब भी मैं कुछ देना चाहूंगा।' इस पर मैंने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, 'आपकी कृपा हो जाय तो मीरांबाई पर पुस्तक लिखना चाहूंगा।'

मुझे पता ही नहीं था कि मीरां उनकी सग्गी बुआ थी। उन्हें अचरज हुआ कि लेखकों में भी ऐसा व्यक्ति पहलीबार गादी पर आया जिसकी कोई समस्या नहीं, कोई चाहना नहीं और मेरे पूर्वज पर लिखने को ये बेताब हैं जबकि पूर्वज तो इनके खुद के भी हैं। मुझे उन्होंने फरमाया, 'आपकी इच्छा पूरी होगी।' सुधाजी की ओर संकेत कर बोले, 'शीघ्र कार्यक्रम बना लेना।'

बाद में हमने सन् 1982-84-85-86 तथा 87 में राजस्थान सहित छह प्रान्तों की यात्रा कर 'निर्भय मीरां' पुस्तक लिखी। कल्लाजी बावजी की गादी पर जब-जब भी मैं गया, मुझे सबसे पहले यही कहा, 'शाहजी लिखणो बन्द करो मती।' तबसे मैं प्रतिदिन ही अपने लेखन में व्यस्त हूं। लोकदेवता कल्लाजी बावजी का दिया यह प्रसाद ही मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर बना हुआ है। -म.भा.

स्मृतियों के शिखर (180) : डॉ. महेन्द्र भानावत

हम तो चरखा से लेवैं सुराज हमार कोई का करिहे

गांधी ने चरखा दिया जैसे जीवन दिया। चरखे का तार-तार जीवन की सार-सार डोरी है। रूई धुनती है। अच्छी धुनी हुई रूई से अच्छा तार निकलता है उसी तरह कर्म-कसौटी पर जीवन कसता है तब पसीना-पसीना तार-तार निकलता है। उधर तार-तार की कुकड़ी तैयार होती है। इधर पुरुषार्थ का पौरूष पराक्रम जीवन को नाना ज्ञान-विज्ञानादि अनुभवों की कुकड़ी में बुनता चलता है। यही सच्चा जीवन है। इसी जीवन में ताल है, लय है, गति प्रगति और मति रति है। कृष्ण तो जेल में पैदा हुए मगर गांधी का तो घर ही जेल हो गया। कृष्ण ने मधुर मुरली बजाई तो गांधी ने मस्ताना चरखा चलाया। कृष्ण माखन चोर कहाये तो गांधी नमक चोर। गांधी और कृष्ण के युग में जितनी दूरी है उतना ही फर्क उनके कर्म-उपादानों में है। ये उपादन अपने-अपने युग के असल सत्य को प्रकट करने वाले इतिहास प्रकरण हैं। देश की स्वतंत्रता के बाद गांधीजी हमारे जितने आदर्श होने चाहिये थे हमने उतना ही उनको विस्मृत कर दिया। इसलिए हम भटकते रहे और जो सुन्दर कल्पना हमारी अपने देश के प्रति थी वह धूमिल होती गई। यही कारण है कि आज हर क्षेत्र में, चाहे वह परिवार का हो, व्यक्ति का हो, समाज या राष्ट्र का हो गांधी का कहा, किया, बताया ही हमें एकमात्र विकल्प लगता है और यही विकल्प हमारा कल्प भी है। अब हमारे लिए गांधी व्यक्ति नहीं, विकल्प है।

गांधी लोकमन का कल्प मनुष्य था। एक ऐसा कल्प जिसने न केवल आजादी ही दिलाई अपितु अपाहिजों, अन्त्यजों को एक भरोसा, संबल, सहारा, सब्र, सांत्वना और वह सब कुछ दिया जिसकी उन्हें चाह थी। क्या कारण है कि कोई भी महापुरुष लोकमन में उतना गहरा नहीं पैठ पाया जितना गांधी बाबा पैठा। क्यों गांधी इन सबका एक ही विकल्प बना! इन सबका ही नहीं आज पूरे राष्ट्र की हर हालत, हरकत और हवालात का विकल्प भी एक ही गांधी दिखाई दे रहा है।

गांधी ने कभी अपने को महान नहीं बताया। न वे अपने मन में इस बात की गठरी बांधे चले कि लोग उन्हें महामानव कहें और उन्हें ईश्वर स्वीकारें। उन्होंने अपने को सदा सहज मानव ही बनाये रखा। इसीलिये वे सबके मन में सहजतापूर्वक पैठ गये। गांधी कहां-कहां नहीं पहुंचा! मैंने एक गड़रिये से पूछा- 'गांधी कौन था!' नाम सुना? उसने कहा- 'नाम खूब सुना। वह बकरियां चराता था।' मैंने एक हरिजन बालिका से पूछा- 'गांधीजी का नाम सुना! वे कौन थे?' उस बालिका ने अपनी आधी मुस्कान में अपने पास पड़ा झाड़ू छूते हुए कहा- 'गांधीजी झाड़ू लगाते थे।' सड़क पर जूते गांठने वाली चमारिन से पूछा- 'गांधी का नाम सुना! कौन थे वे?' उसने कहा- 'वे बहुत बड़े आदमी थे। उन्होंने जीवों की रक्षा की।'

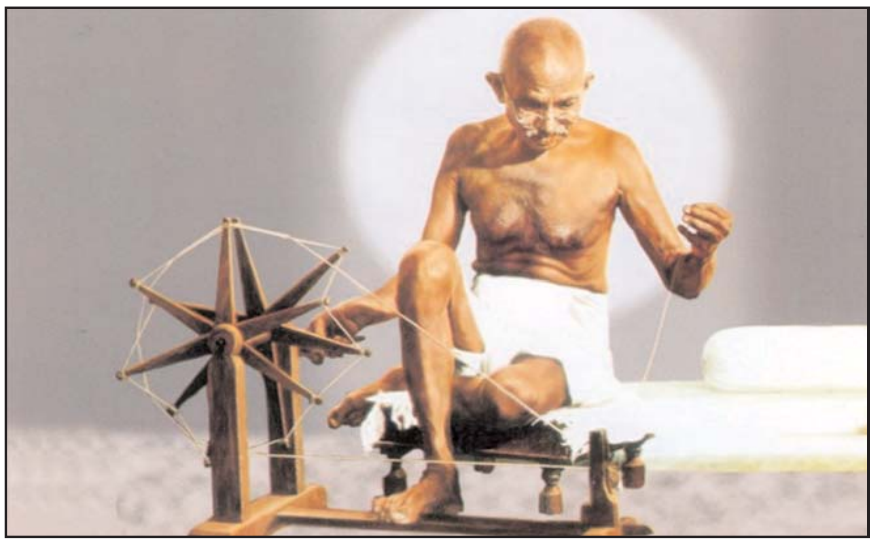

आजादी के इतने बरस बाद भी गांधी की गंध किन-किन रंगों में कितने अच्छे रूप में गंधिया रही है। जीवन का मूल मंत्र तो कर्म है और कोई भी कर्म किया जाय उसके साथ सद्निष्ठा का भाव आवश्यक है। गांधी ने कर्म के प्रति यह जो भाव दिया वही किसी के जीवन की सबसे बड़ी कमाई है। गड़रिये ने गांधी को गड़रिया माना। गांधी उसके लिए अपने काम और कमाई के प्रति समर्पण भाव का प्रतीक हो गया।

हरिजन बालिका के लिये तो झाड़ू ही परमेश्वर है। गांधी ने उस बालिका को झाड़ू की चिंता में न केवल उसकी आजीविकामय जीवनी दी अपितु कर्ममय जीवन का ईश्वरत्व दे दिया। चमारिन को जूतों की हर गठान में एक यह सबक दिया कि जान सभी को प्यारी है। किसी भी जान को बेजान बनाना अपराध है पर यदि कोई बेजान हो गया तो उसके द्वारा यदि कोई जानदार कृति-कर्म किया जाता है तो वही जीवन की सार्थक गठान है।

गांधी ने चरखा दिया जैसे जीवन दिया। चर-चर कर खाने का यह अमोघ मंत्र जीवन में पुरुषार्थ और स्वावलंबन के माध्यम से स्वाधीन चेतना को जन्म देता है। चरखे का तार-तार जीवन की सार-सार डोरी है। रूई धुनती है। अच्छी धुनी हुई रूई से अच्छा तार निकलता है उसी तरह कर्म-कसौटी पर जीवन कसता है तब पसीना-पसीना तार-तार निकलता है। उधर तार-तार की कुकड़ी तैयार होती है। इधर पुरुषार्थ का पौरूष पराक्रम जीवन को नाना ज्ञान-विज्ञानादि अनुभवों की कुकड़ी में बुनता चलता है। यही सच्चा जीवन है। इसी जीवन में ताल है, लय है, गति प्रगति और मति रति है।

चरखे ने कितनी असहायों विधवाओं को जीवन दिया। बुझते मन को जलती ज्योति दी। अविराम आराम दिया है। मेरे गांव कानोड़ में ही मैं अपने बचपन से देखता आ रहा हूं- हर महिला ने चरखा काता है। कई विधवाओं का तो चरखा जीवन का आधार बना और आज भी बना हुआ है। कई माताओं ने चरखे की कमाई में अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया है। मेरी मां ने भी हम दोनों भाइयों को चरखा कात कर पढ़ाया। यदि वह चरखा घर-घर प्रवेश नहीं करता तो कितनों का जीवन अंधेरा ले डूबता! पूणी की कताई के सहारे चरखे का गीत चलता-

गांधीजी दरसण दे गया
घणा दनां में आया गांधीजी आया गांधीजी
घर-घर चरखा चलाय।। गांधीजी..।।
रेंट्यो तो है रंगरंगीलो रंगरंगीलो
ताण्या है लाल गुलाल।। गांधीजी..।।
वायल मुलमुल छोड़ दो
गांधीजी छोड़ दो गांधीजी
करलोनी खादी रो वेपार।। गांधीजी..।।

गांधीजी के संबंध का यह गीत ब्याह शादियों में मेरी मां ने बहुत गाया है। पुरानी महिलाएं आज भी गा लेती हैं पर जब मैं अपनी मां को पूछता कि ये गांधीजी कौन थे तो वह उत्तर नहीं दे पाती पर यह जरूर कहती कि उनके चरखे ने मेरी मां को और उसके दोनों बच्चों को अनाथपन से उबारा है। उन घड़ियों को जब मां याद करती तो मुझे लगता उसके रेंटिये (चरखे) का एक-एक तार उसके डड्वे-डड्वे आंसु से भीगकर भारी होता जाता।

तेलगु में भी यह गांधी-चरखा और पूनी इसी प्रकार प्रत्येक घर की शोभा बन गई। उधर प्रचलित एक लोकगीत में कहा गया, हे पुत्रियों! चरखा कातो। गांधी की जयकार करते हुए सूत के तार निकालो। पूनी और चरखा तो घर की शोभा है-

राटमु ओड्कारम्मा ओ अम्मालारा
गांधी की जय अंचु दारामु तीयारे
एकुलु राममु इन्टिकन्दम्मू
महात्मा गांधी प्रजल कन्दम्मू।

तमिल के एक लोकगीत में तो गांधीजी को एक रक्षक बताया और उन्हें ऋषि महाऋषि से सम्बोधित किया- गांधी ऋषि काप्पालुं महाऋषि गांधी ऋषि।

गांधी ने कहा- मैं भारत के अनाथ बच्चों के लिए चरखा कातता हूं। राजस्थान में तो अकेले चरखे को लेकर कई लोकगीत सुनने को मिलते हैं। एक गीत में तो चरखे को कातने वाले गांधी बाबा का उल्लेख तक आ गया है जो खद्दर पहन बैठे हैं और महीन-महीन पूनी का लम्बा-लम्बा तार निकाल रहे हैं।

चाल रे चरखला हाल रे चरखला
ताकू तेरो सोवणो लाल गुलाबी माल
चरकूं मरकूं फिरै घेरणी मधरो मधरो चाल....
गड्डी तेरी रंगरंगीली तकली चक्करदार
चोखो बरायो दमकड़ो तेरो कूकड़िये री लार....
कातणवाले गांधीबाबा बैठे खद्दर धार
महीं-महीं वी पूणी काते लंबो काढ़े तार....

उधर बाड़मेर-जैसलमेर के रेतीले अंचल में तो चरखा पूरे परिवार को ढकेलने वाला बन गया है। लंगों-मांगणियारों के इस लोकगीत में -

घूम रे चरखा घूम /
म्हारो अंग ढकेला थूं /
म्हारी नथड़ी रो मोती थूं।

इस गीत को लंगा गायक नूर मोहम्मद ने इतना प्रचारित किया और प्रियता प्राप्ति की कि जहां-जहां भी उन्हें गाना होता, इस गीत को बड़ी तबीयत से गाते और सर्वाधिक फरमाइश भी इसी गीत की होती। अपने विदेश प्रवास में भी उन्होंने इस गीत के पीछे बड़ा यश-सम्मान अर्जित किया।

राजस्थान के इन गीतों में चरखे को लेकर जो नखशिख और उसकी आत्मरंगीनी व्यक्त की गई वैसी अन्य प्रान्तों में देखने-सुनने को नहीं मिलेगी। लंगा बंधु इस चरखे गीत में इतने तन्मय हो जाते कि एक शाश्वत संगीत और स्वर्गीय आनंद की साक्षात् अनुभूति होने लगती। गांधी के चरखे की कितनी महिमा है! कितना माहात्म्य है! कितनी महक, कितना ममत्व और कितना मोल तोल है!

लोकमन कितना बली और आत्मविश्वासी होता है। इसके बल के आगे सारे के सारे भौतिक बल कुछ नहीं हैं। यहां के समग्र लोक ने तो गांधीजी की स्वतंत्रता की लड़ाई की बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि चाहे कितना ही कोई उपाय किया जाय अंग्रेज कभी जीत नहीं पायेंगे। हम तो चरखा चला-चलाकर स्वराज्य लेंगे, हमारा कोई क्या कर लेगा!

गांधी की लड़इया में जीते न फिरंगिया
चाहे कर केतनो उपाउ
हम तो चरखा से लेवैं सुराज
हमार कोई का करिहे!

कितना दमखम है इस लोकशक्ति में! कितना जोश है इस लोकचेतना में! कितनी आग और जाग है इस लोकमनसा में! गांधीबाबा का हुकम होना चाहिये। उसके हुकम में दुनियां चलती है। 'नवा रे घर को नवा रे थुनिया। गांधीबाबा के हुकम में चले रे दुनियां'। छत्तीसगढ़ी लोकगीत की यह पंक्ति कितनी टंच है!

हरियाणा, पंजाब, भोजपुर, संथाल, मणिपुर जहां भी चले जांय गांधी की मनसा को इन लोकगीतों ने विविध भावों में उगेरा है। उनके स्वराज्य आन्दोलन की पूरी पीठिका को अभिव्यक्त किया है। उनके सपनों का सही चितराम दिया है और इन गीतों से जो वातावरण गांव-गांव घर-घर बना उसी ने गांधीजी के आन्दोलन को अग्नि की तेज धार दी और अंग्रेजों को भारत छोड़ने को विवश किया।

एक भोजपुरी लोकगीत में तो कृष्ण और गांधीजी की बड़ी ही सुन्दर तुलना की गई है। उसमें कहा गया है कि कृष्ण तो जेल में पैदा हुए मगर गांधी का तो घर ही जेल हो गया। कृष्ण ने मधुर मुरली बजाई तो गांधी ने मस्ताना चरखा चलाया। कृष्ण माखन चोर कहाये तो गांधी नमक चोर। गांधी और कृष्ण के युग में जितनी दूरी है उतना ही फर्क उनके कर्म-उपादानों में है। ये उपादन अपने-अपने युग के असल सत्य को प्रकट करने वाले इतिहास प्रकरण हैं।

गांधीजी शान्ति की खोज में कभी हिमालय नहीं भटके। वे सारे देश में पूरे लोक में शान्ति चाहते थे। अपनी मृत्यु के एक दिन पूर्व 29 जनवरी 1948 की प्रार्थना सभा में उन्होंने कहा था- ''मैं शान्ति तो चाहता हूं मगर हिमालय जाकर नहीं। मेरा हिमालय यहां है। मैं अशान्ति में शान्ति चाहता हूं। नहीं तो उस अशान्ति में मर जाना चाहता हूं। सत्य भी है, महत्व भी उसी शान्ति का है जो अशान्ति के बीच प्राप्त होती है। जब सारा देश अशान्ति में हो तब उसे छोड़कर कहीं दूर शान्त जगह जाकर शान्ति पाने वाला क्या उपलब्धि देगा।''

गांधी समग्र मानवता का मसीहा थे। उनकी समग्र लड़ाई मानवता की लड़ाई थी। उनका लक्ष्य हिन्दुस्तान की आजादी ही नहीं था। वे तो विश्व बन्धुत्व की भावना को अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानते थे। देश की स्वतंत्रता के बाद गांधीजी हमारे जितने आदर्श होने चाहिये थे हमने उतना ही उनको विस्मृत कर दिया। इसलिए हम भटकते रहे और जो सुन्दर कल्पना हमारी अपने देश के प्रति थी वह धूमिल होती गई। यही कारण है कि आज हर क्षेत्र में, चाहे वह परिवार का हो, व्यक्ति का हो, समाज या राष्ट्र का हो गांधी का कहा, किया, बताया ही हमें एकमात्र विकल्प लगता है और यही विकल्प हमारा कल्प भी है। अब हमारे लिए गांधी व्यक्ति नहीं, विकल्प है।

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं- https://thetimesofudaipur.com/shabd-ranjan/

शब्द रंजन
उदयपुर, शुक्रवार 01 मार्च 2024

सम्पादकीय

के तो राखै राम ने के राखै डाम

बीमार होना मानव का प्राकृतिक धर्म है। कुछ बीमारियां तो ऐसी हैं जो मानव की स्वस्थता लिए जैसे अवश्यक भी हैं। उन्हें प्राप्त कर मनुष्य स्वस्थ होता है और ताजगी का अनुभव करता है परन्तु अधिकांश बीमारियां ऐसी होती हैं जिनके प्रति यदि सावधानी नहीं बरती गई और उनका ठीक से उपचार नहीं कराया गया तो वे प्राणलेवा जैसा घातक रूप धारण कर लेती हैं।

जो लोग किसी बीमारी को नहीं समझ पाते हैं अथवा उसके उपचार आदि की तनिक भी परवाह नहीं करते हैं उनके लिए छोटी साधारण बीमारी भी कभी-कभी बड़ा भयंकर रूप धारण कर लेती है और उन लोगों के लिए जो हर बीमारी को समझते हैं, उसका पूरा इलाज कराते हैं। उनके लिए बड़ी-से-बड़ी बीमारी भी साधारण होती हुई देखी गई है।

गांवों के हमारे इस देश में झाड़फूक, तंत्रमंत्र, टोने-टोटके तथा जड़ी-बूटियां ही हर प्रकार की बीमारी के लिए काम आती रही हैं परन्तु जब इनसे भी कोई उपचार होता नहीं दिखता है तो फिर आदमी या तो राम नाम की ही शरण लेता है या फिर सम्बन्धित डामकार से डाम दिलाकर उससे मुक्त होता है इसीलिए देहातों में यह कहावत 'के तो राखै राम ने के राखै डाम' लोगों की हर जुबान पर सुनने को मिलती है। डाम के डाक्टर प्राय: हर गांव में आसानी से मिल जायेंगे। बीमारी के अनुरूप ये डाम बणेटी, बोया, ढाक के पत्ते की बींटणी, सुई की नोक, ठीकरी तथा तार को गर्म कर किसी नस विशेष अथवा स्थान विशेष पर लगाया जाता है।

एक डामदेवात ने बताया कि मुझे ठीक तो याद नहीं पर हल्की सी एक धूंधली स्मृति अवश्य है। 6-7 वर्ष की उम्र में जब मैं बहुत बीमार हो गया और काफी दवादारु के बाद भी जब स्वस्थ नहीं हो सका तो मुझे अपने कस्बे के पास ही के एक गांव में ले जाया गया जहां छोटी सी गर्म ठीकरी से मेरे नाभि के पास वाले स्थान को जलाया गया। उसके बाद मैं कभी बीमारी की चपेटे में नहीं आया। विविध प्रकार के कुछ खास रोगों के लिए लगाये जाने वाले डामों की जानकारी उसने कुछ इस प्रकार दी-

लुरकी खांसी होने पर गले के नीचे की नस पर ढाक के पत्ते की बींटणी का जवार के दाने जैसा छोटा सा झपेट्या लगाया जाता है। अंडकोशों में पानी उतर जाने पर कलई वाली नस पर अंगूठे के पास तार का डाम दिया जाता है। दायें कोश में पानी उतर गया हो तो बांई कलई पर और बायें कोश में पानी उतर गया हो तो दांई कलई पर। कमल्या रोग होने पर नाभि पर ठीकरी का डाम लगाया जाता है। फीया कालजा होने पर पीछे पीठ पर तीसरी पसली के ऊपर डाम लगाया जाता है। आधा सिर दर्द करने पर यदि दांई ओर दर्द करता है तो बांई भौंहों के मुख पर व बांई ओर दर्द करता है तो दांई भौंहों के मुख पर डाम दिया जाता है। यदि इससे आराम नहीं होता है तो कनिष्ठिका के पास वाली नस पर सुई का चपकट्या दिया जाता है। गुजराती होने की स्थिति में जब सीने में दर्द करता है और खांसी चलने पर कफ नहीं घुरता है तो सीने पर दोनों ओर ठीकरी का डाम लगाया जाता है।

जिस स्थान पर डाम देना होता है वहां पहले राख से निशान बना लिया जाता है। डाम देने के बाद उसका पकना बहुत आवश्यक है। इसके लिए दूसरे दिन आक के पत्ते सूंघकर उसका रस लगा लिया जाता है। नारियल की चटक जलाकर लगाई जाने से डाम बहुत शीघ्र ठीक हो जाता है। आज यद्यपि डाम का प्रचलन अब उतने रूप में नहीं है परन्तु जब व्यक्ति सभी प्रकार के इलाज कराने पर भी तंदुरुस्त नहीं हो पाता है तो डाम की ही शरण लेता है। यही डाम तब उसके लिए राम सिद्ध होता है।

प्रो. सारंगदेवोत बेस्ट वाइस-चांसलर सम्मान से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति कर्नल प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत को यूनिवर्सिटी मलेशिया केलंतन, मलेशिया और डीएनएस फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में बेस्ट वाइस-चांसलर से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान शिक्षा में नवीन पद्धतियों और नवाचारों का अन्वेषण कर उनके संवर्धन में अनुपम अवदान हेतु प्रदान किया गया। शिक्षा, शोध के उत्थान के द्वारा समाज सेवा का लक्ष्य लिए प्रो. सारंगदेवोत जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के सातवें कुलपति, विद्या प्रचारिणी सभा के कार्यकारी अध्यक्ष व चेयरमैन बीएन विश्वविद्यालय के पद पर कार्यरत हो अपनी प्रभावी बौद्धिक क्षमता, कुशल नेतृत्व, दक्षता और असाधारण शैक्षणिक सूझबूझ को सिद्ध किया है।

उनके विशिष्ट कार्यों में जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ की गरिमा को पुनर्स्थापित करना, नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त कर लेना, सभी पाठ्यक्रमों की यूजीसी से मान्यता लेना, विद्यापीठ का आईआईआरएफ व यूनिरैंक में उदयपुर में प्रथम व राज्य में तृतीय स्थान प्राप्त कर पाना, राष्ट्रीय स्तर के खेलों का आयोजन तथा विद्यापीठ का एक रिकॉर्ड स्वीकृत होना शामिल हैं। प्रो. सारंगदेवोत के 13 पुस्तकें और 10 मोनोग्राफ प्रकाशित हो चुके हैं और उन्होंने अपने नाम से 25 पेटेंट्स का पंजीकरण करवाया है तथा 10 पेटेंट ग्रांट भी हो चुके हैं। आपके मार्गदर्शन में 80 शोधग्रन्थ (पीएच.डी.) जमा हो चुके हैं और 8 शोधकर्ता अभी पीएच. डी. कर रहे हैं। प्रो. सारंगदेवोत द्वारा 13 शोध पत्रिकाओं का प्रारंभ और संचालन, शोध प्रयोगशालाओं की स्थापना, मीरां, महाराणा प्रताप और राव मोहनसिंह पीठ की स्थापना, संकाय सदस्यों को आर्थिक प्रोत्साहन, आधारभूत संरचना की सशक्तता, पुस्तकालयों का डिजिटलीकरण, उत्कृष्ट परीक्षा सुधार, प्रगतिशील शोध कार्य, कई कौशल-आधारित पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ आदि कार्य करवाए। प्रो. सारंगदेवोत ने न केवल कई नये अकादमिक और कौशल विकास आधारित पाठ्यक्रम प्रारंभ किये वरन दो कन्या महाविद्यालयों की स्थापना भी की और सांयकालीन महाविद्यालय को पुनर्जीवित किया।

शहर उदास है पंकज उधास के बिना

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

पंकज उधास ने सुरों को जिया और बहत्तर कलाओं की तरह बहत्तर बरस पूरे किए। कोई तीस बरस तक वे अपने गले से देश और देश के बाहर कभी कजरे की धार तो कभी चांदी जैसा रूप बांटते रहे। किसी कलाकार का जाना, उसकी प्रस्तुतियों के बीच चित्ररूप में स्मृत हो जाना है। उधास हमेशा प्रशंसकों के पास बने रहेंगे।

भारतीय संगीत की लोकप्रिय विधा ग़ज़ल के सुप्रसिद्ध गायक पंकज उधास का निधन उनके प्रशंसकों ही नहीं, संगीत के हर प्रेमी के लिए दु:खद ख़बर है और उस सरसब्ज उदयपुर के लिए तो पतझड़ जैसी जहां घर से गली और पोल से चौहट्टा तक उनकी गजलों ने धूम मचाई। उदयपुर के संगीतप्रेमियों ने उनको दो बार बुलाया और आमने सामने सुना। एकबार तो फतहसागर की आती जाती लहरों की तरह उनके सुरों के ऐसे आस्वाद का अवसर बना कि उनको कहना पड़ा -'पानीदार शहर में सुनने वाले भी बड़े दमदार हैं।'

उदयपुर वाले कैसे भूल सकते हैं कि यहां पान का बड़ा कारोबार रहा और चेतक सर्किल, पहाड़ी बस स्टैंड, हाथीपोल, मोती चौहट्टा, भड़भूजा घाटी, जगदीशचौक और रावजी का हाटा से लेकर कोलपोल, सूरजपोल और देहलीगेट तक जहां कहीं पान की थड़ियां थीं, शाम ढलते ही रोशनी की लौ की तरह पंकज उधास की आवाज़ फूटती थी।

तब कैसेट्स का जमाना था और टू इन वन होना शान समझा जाता था। शान पर मान के पान और उस पर कुरता, पाजामा और शॉल लगाए पंकज उधास का स्वर होना किसी महफ़िल से कम नहीं होता था। आवाज़ की महफ़िल। चर्चा में उधास के बोल कत्थई लबों पर होते थे - 'ख़ुदा करे के मोहब्बत में वो मुकाम आए, मेरे लबों पे हमेशा सनम का नाम आए।'

मुझे अच्छी तरह से याद है कि उदयपुर की तरह ही ऐसी महफिलों की हवा गांवों तक भी पहुंची। हर कोई सुनने वाला कह उठता था- 'उधास के दास।' घरों में बेटे बेटी क्या माता पिता और दादा दादी भी फैन। रिकॉर्डर तो क्या, रेडियो भी पीछे नहीं।

पंकज उधास गले से ही नहीं, सूरत से भी सुंदर थे। कंधे पड़ी शॉल तिलस्म करती थी। संजयदत्त की 'नाम' और 'साजन' फिल्म में तो उन्हें लाइव कंसर्ट के तौर पर दिखाये जाने की वजह फिल्म निर्देशकों के प्रयोग से ज्यादा लोगों में उनकी लोकप्रियता रही। महंगे और सहज उपलब्ध नहीं होने के कारण लोग फिल्म जाकर देख आते। दोनों ही फिल्मों को उनकी मौजूदगी का लाभ मिला। इस नाते वे पारंपरिक पार्श्व गायक की सीमा और रूढ़ियों को तोड़ने वाले भी होकर सामने आए। साजन में उन पर फिल्माया गीत आज तक अधरों की धार बना हुआ है - जीएं तो जीएं कैसे, बिन आपके, लगता नहीं दिल बिन आपके, कैसे कहूं बिना तेरे जिंदगी ये क्या होगी, मैंने किया ये फैसला, जीना नहीं तेरे बिना...।

पंकज उधास ने सुरों को जिया और बहत्तर कलाओं की तरह बहत्तर बरस पूरे किए। हसरत जैसा एलबम उन्हें सम्मान दिलाने वाला सिद्ध हुआ तो चिट्ठी वाला गीत परदेस में वतन की मिट्टी से मोहब्बत जगाने का सूत्र बना।

वर्ष 2006 में जब उन्हें पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया, उन्होंने कहा, 'ये सब उनके प्रशंसकों का उपहार है।' कोई तीस बरस तक वे अपने गले से देश और देश के बाहर कभी कजरे की धार तो कभी चांदी जैसा रूप बांटते रहे। किसी कलाकार का जाना, उसकी प्रस्तुतियों के बीच चित्ररूप में स्मृत हो जाना है। उधास हमेशा प्रशंसकों के पास बने रहेंगे।

'मन की बेचैनी ही लिखने को प्रेरित करती है'

उदयपुर। मन का संतोष होने पर तो लेखन अपना प्रभाव निस्तेज कर देता है किन्तु उसकी गहन बेचैनी ही किसी लेखन को धारदार बनाती है। यह बात प्रसिद्ध लोकमर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने कही। वे कस्तूरबा मातृमन्दिर सभागृह में डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव' की पुस्तक 'मन में उठते प्रश्न' के लोकार्पण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि आज का लेखक अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। जहां पाठकों की संख्या कम होती जा रही है तब वह किसके लिए लिखे, क्या लिखे फिर प्रकाशन की समस्या भी कम नहीं है। ऐसा होते भी कुछ लेखक निरन्तर लिख रहे हैं और छप भी रहे हैं। डॉ. जयप्रकाश भाटी भी उनमें से एक हैं जो साहित्य की सभी विधाओं में बेहतरीन लिख रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि एडवोकेट मनीष श्रीमाली ने कहा कि सारी चुनौतियों के बावजूद मेरे जैसे पाठक भी हैं। मेरे अपने पुस्तकालय में अनेक साहित्यकारों की कृतियों के संग्रह हैं और मैं उनका नियमित पाठक बना हुआ हूं।

अध्यक्ष हास्य-व्यंग्य लेखक डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना ने कहा कि 'मन में उठे प्रश्न' में डॉ. भाटी के 28 आलेखों का संचयन उनकी साहित्यिक चेतना के विविध बिम्बों का इन्द्रधनुषी रंग लिये है। तीन खण्डों - व्यक्तित्व, भाषा एवं साहित्य तथा चिन्तन में उनकी लेखकीय प्रतिभा, साहित्य के सरोकारों के प्रति समर्पणता तथा चिन्तन की गम्भीरता के दर्शन होते हैं।

प्रारम्भ में लेखक डॉ. भाटी ने अपनी लेखन यात्रा का परिचय देते बताया कि उनका पहला कविता संग्रह 'सावन की धूप' का प्रकाशन 1966 में हुआ। तब से वे निरन्तर लिख रहे हैं।

समारोह में टखमण-28 कला संस्था के डॉ. एल. एल. वर्मा, डॉ. भावना शर्मा, दुर्गाशंकर गर्ग, कैलाश पटेल, मंजु गुर्जर की उपस्थिति प्रमुखता लिये रही। इस अवसर पर संयोजिका डॉ. अंजना गुर्जरगौड़ ने डॉ. भानावत को अपनी पुस्तक 'मेवाड़ के इतिहास में गैर-राजपूतों की भूमिका' भेंट की। **- डॉ. अंजना गुर्जरगौड़**

राम से सम्बन्धित पुरुषों के नाम

रामलाल, रामसिंह, रामलोचन, रामस्वरूप, रामसुनाम, रामचन्द्र, रामरथ, रामरंजन, रामलुभाया, रामदेव, रामराज, रामवृक्ष, राममोहन, रामकिशन, रामधारी, रामजुग, रामलला, रामभजन, रामप्यारा, रामदूत, रामावतार, रामसुख, रामप्रताप, रामसखा, रामरमैया, रामभगत, रामजुलाहा, रामप्रसाद, रामधरण, रामबख्श, रामलखन, रामकुमार, रामकरण, रामरतन, रामनवावास, रामगिरि, रामनाथ, रामभजन, रामवचन, रामरिख, रामकृष्ण, रामबिहारी, रामसागर, रामदयाल, रामरज, रामसिक, रामुरूप, रामधुन, रामशंकर, रामभरोसे, रामदीन, रामगुलाम, राममल, रामबीर, रामरसखान, रामावतार, रामबहादुर, रामसा, रामोद्धार, रामकिशोर, रामजस, रामधनिया, रामपथ, रामसुमन, रामरथ, रामसरन, रामेश, रामाधिपति, रामसेवक, रामकिंकर, रामप्रकाश, रामेश्वर, रामधेनु, रामरूड़ो, रामरूपक, रामतारक, रामसहाय, रामछड़ा, रामव्रत, रामेन्द्र, रामदत्त, रामधर्मा, रामतीर्थ, रामदीप, रामधन, रामोधर, रामनारायण, रामजणा, रामधवल, रामनवल, रामसखा, राममनोहर, रामकोश, रामनिधि, रामशलाका, रामवन, रामगोपाल, रामपाल, रामफूल, रामस्नेही, रामराजन, रामभद्र, रामलखन, रामचरन, रामनैन, रामनेह, रामदूत, रामरूप, रामबसेरा, रामहितैषी, रामधाम, रामबसेरा, रामधेनु, रामवत्सल, रामसुधा, रामसखा, रामरसायन, राममूर्ति, रामानुज, रामेश्वर, रामकरण, रामरस, रामगनी, रामअली, रामघट, रामवट, रामबाबू, रामचमन, रामधवल, रामगुरु, रामरत्नाकर, रामविजय, रामविनोद, रामदक्ष, रामवन, रामचलन, रामउदय, रामानंद, रामनाथ।

- डॉ. कहानी भानावत

पोथीखाना

एक अछूते विषय को समृद्ध करती ऐतिहासिक कृति

मेवाड़ के इतिहास को केवल युद्धवीरों ने ही उजले पन्ने नहीं दिये हैं अपितु दानवीरों, अपने प्रण पर अटल रहने वाले प्रणवीरों, राजकाज को सुव्यवस्थित अंजाम देने वाले नीतिनिपुणों, संकट आने पर राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर देने वाले स्वाधीनचेताओं से भी इतिहास के अध्याय स्वर्णमण्डित रहे हैं पर ऐसे अनेक अछूते प्रसंग हैं जो कलमकारों की निगाह से अछूते ही रहे हैं। उन्हीं प्रसंगों को पहलीबार डॉ. अंजना गुर्जरगौड़ ने अपने शोध का विषय बनाकर जगजाहिर किया है। इस दृष्टि से 'मेवाड़ के इतिहास में गैर-राजपूतों की भूमिका' नामक पुस्तक का प्रकाशन सर्वथा अभिनन्दनीय है।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ. के. एस. गुप्ता ने अपने आशीर्वचन में भी इसी बात को रेखांकित करते लिखा- 'आश्चर्य है कि शासकों व सामन्तों के योगदान को तो पर्याप्त रूप से उजागर करने के लिए अनेक लेखकों ने अपनी कलम चलाई किन्तु गैर-राजपूत समाज का योगदान महत्त्वपूर्ण होते हुए भी इतिहासवेत्ताओं का उसको प्रकट करने के लिए ध्यान पर्याप्त रूप से नहीं गया है। इस दृष्टि से डॉ. अंजना गुर्जरगौड़ ने बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है।'

यही नहीं, डॉ. जगदीश भाटी ने भी अपना मंतव्य देते लिखा- 'डॉ. अंजना का यह शोध अध्ययन इतिहास के उन खाली पन्नों को पूरता है जो जाने या अनजाने छूट गये। यह अध्ययन उस चूक का भूल सुधार प्रयास ही है जिन्हें कई बार हमने जानबूझकर जानने की कोशिश ही नहीं की। उन्हीं खाली पन्नों में ऐसे कई गैर-राजपूत व्यक्तित्वों का पराक्रम और कूटनीतिपूर्ण कार्यों का चित्र उभरता है जिन्होंने मेवाड़ की रक्षार्थ जीवनोत्सर्ग कर इस पावन वीर रंगस्थली को धन्य किया। इन लोगों ने मेवाड़ के शासकों की रक्षार्थ जहां एकओर त्याग, बलिदान दिया वहां

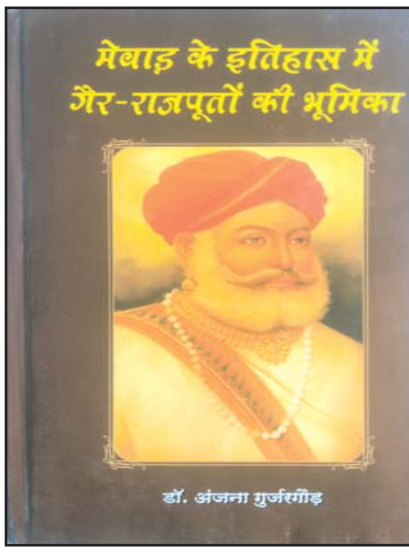

दूसरी ओर राजपूत सामन्तों के आंतरिक कलह से उत्पन्न विकट परिस्थितियों में जर्जरित मेवाड़ के वर्चस्व एवं उनके सम्मान को यथावत बनाये रखने के लिए निरन्तर प्रयास किया। कहीं-कहीं तो इन व्यक्तित्वों का त्याग व कृतित्व राजपूत सामन्तों से भी बढ़कर है।'

सात अध्यायों में सम्पूर्ण हुए इस शोधप्रबन्ध के प्रथम अध्याय में भामाशाह, ताराचन्द, जीवाशाह, हकीमखां सूर ने जहां महाराणा प्रताप के साथ रहकर मुगल सम्राट अकबर से लोहा लिया वहीं दूसरे अध्याय में 1615 ई. से 1652 ई. के मध्य प्रधान भागचन्द, मधुसूदन भट्ट, भाणा, मुकुन्द, मनोहर आदि के योगदान का उल्लेख किया है।

तीसरा अध्याय प्रधान फतहचन्द, पुरोहित गरीबदास और दयालदास आदि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के मूल्यांकन के साथ ही सन् 1652 से 1680 तक के काल में हुए साहित्य एवं कला के क्षेत्र में हुए कार्यों का विश्लेषित किया गया है।

इसी प्रकार उत्तरकालीन मेवाड़ की पतनोन्मुख हुई स्थिति सन् 1735 तक बनी रही। उनमें जगन्नाथ व रणछोड़राय की महत्त्वपूर्ण भूमिका के साथ राणा अमरसिंह द्वितीय के समय बिहारीदास पंचोली द्वारा बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर के विरूद्ध किये गये सैन्य अभियान एवं उपलब्धियों पर विस्तार से पांचवें अध्याय में आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।

छठा अध्याय सन् 1734 से लेकर 1778 तक के काल की भयावह स्थिति, सामन्तों के आपसी द्वेष से राज्य की डांवाडोल स्थिति के बीच कायस्थ गुलाब राव, अमरचन्द बड़वा, पंचोली काशीनाथ, धायभाई रूपा, अगरचन्द मेहता आदि के शासक एवं शासन के प्रति किये गये निष्ठाभाव की स्थिति को विश्लेषित किया है। अन्तिम सातवां अध्याय मेवाड़ के आंतरिक विद्रोह, अत्याचार और अराजकता की भयावह स्थिति में सोमचन्द गांधी, रामप्यारी, मालदास मेहता, दीपचन्द के कृतित्व का खुलकर अध्ययन लिये हैं।

हिमांशु पब्लिकेशंस, 464-हिरणमगरी सेक्टर-11, उदयपुर से प्रकाशित 164 पृष्ठ की कृति यद्यपि पहलीबार गैर-राजपूतों के महत्त्वपूर्ण योगदान का परिदृश्य लिए महत्त्वपूर्ण है तथापि 995 रूपये का मूल्य अत्यधिक ही कहा जायेगा।

- डॉ. तुक्तक भानावत

'भारतीय नौपरिवहन' पर उम्दा पुस्तक

प्राचीन भारतवर्ष के समुद्रीय और नदी-घाटी के व्यापारिक मार्ग, नौपरिवहन की गतिविधियां अत्यन्त विकसित और विश्वप्रसिद्ध थी। नौसंचालन और जलयात्रा के अस्तित्व के साक्ष्य ऋग्वेद में हैं। रामायण में अनेक उल्लेख हैं तो वराह-पुराण में व्यापार के लिए समुद्री यात्राओं के विवरण हैं। स्मृतियों और पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत के प्राचीन कवि-लेखकों ने जलमार्गों को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

किन्तु भारत की इस धरोहर का विवरण इस शताब्दी के साहित्य में कहीं देखने को नहीं मिलता है। भारत के प्राचीन नौकायन और समुद्रीय गतिविधियों के इतिहास पर डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी की पहली पुस्तक इंडियन शिपिंग सन् 1912 में प्रकाशित हुई किन्तु इतना महत्त्वपूर्ण और विशद विषय साहित्यकारों, इतिहासवेत्ताओं और राज्याध्यक्षों की निगाह से ओझल ही रहा। और तो और, स्वतन्त्र भारत के शिक्षा क्षेत्र में पाठ्य-पुस्तकों में भी भारतीय नौपरिवहन को कहीं स्थान नहीं मिला।

गत सप्ताह शिक्षाविद् मुन्नालाल डाकोत के 'भारतीय नौपरिवहन' हिन्दी अनुवाद से ज्ञात हुआ कि सिंधुघाटी के कालखण्ड से लेकर पांच हजार वर्षों तक भारतीय नौपरिवहन भारत के उद्योगों में अग्रणी और चमकता इतिहास लिए हुए रहा। भारत के भीड़ भरे बन्दरगाह, मौर्यकाल के परिवहन अधिनियम, पोतनिर्माण की उत्कृष्ट स्थानीय कला, पोतों का वर्गीकरण एवं निर्माण तथा भारतीय नौपरिवहन का वाणिज्य और अन्य द्वीपों को उपनिवेश बनाने का योगदान कहीं धुंधलके में खो गया। श्री डाकोत के इस अनुवाद

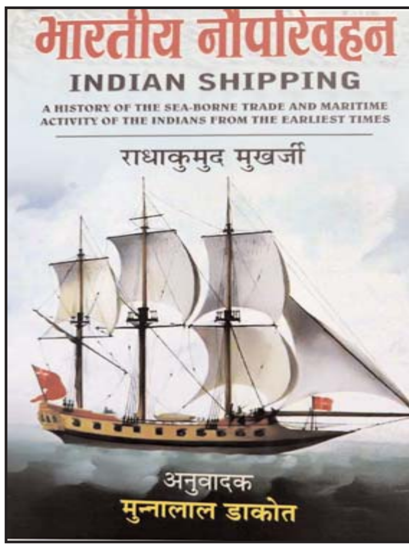

से ज्ञात हुआ कि आदिकाल से मुगल साम्राज्य और अंग्रेजी हुकूमत तक विभिन्न क्षेत्र के नौपरिवहन प्रमाण यह पुस्तक समेटे हुए है।

पुस्तक में भारतीय मूर्तिकलाओं में नौपरिवहन के व्यापक चित्र उपलब्ध हैं। सांची के स्तूप, खजुराहो के मूर्तिशिल्प, जावा-सुमात्रा के महल, युद्ध पूर्व के बारबादुर तक फैले भारतीय सांस्कृतिक चिन्हों में यह सब दृष्टव्य है। दक्षिण भारत से खुदाई में प्राप्त सिक्के, उन पर उत्कीर्ण भारतीय नावों के चित्रण अपने आप में उस काल के पुख्ता प्रमाण हैं। खाड़ी देशों और अफ्रीका के साथ होने वाले व्यापार मार्ग, सामरिक घोड़ों, भेड़ की ऊन, कशीदेदार ऊनी कपड़े, रेशम, मलमल, पन्ना अकीक, सूर्यकांत-रत्न, माल-असबाब, मसाले, हाथी-दांत व सीप की चूड़ियां, मोर पक्षी आदि अनेक वस्तुएं समुद्री मार्ग से भारत से आती-जाती रही थी और राजा-महाराजा और बादशाहों के खजाने पूर्ति का नौपरिवहन बड़ा साधन था।

अलग-अलग साम्राज्यों के समय नदी-घाटी-समुद्र के परिवहन के लिए अलग-अलग प्रकार के शुल्क निर्धारित थे। मौर्य साम्राज्य में नौसैनिक विभाग संगठित था। अशोक महान के काल तक ये व्यवस्था थी। कुषाण काल में रोम से मेलझोल था। गुप्त और हर्षवर्धन काल में वृहद भारत की सीमा जावा तक फैल गई थी। बंगालियों ने कोचीन चाइना में बस्ती बसाई। बोधि धर्म आने से भारतीय सामुद्रिक क्रिया-कलापों को चीन में संवेग मिला। चालुक्य और चोलों का साम्राज्य सुदूर समुद्री द्वीपों तक था। मुगलकाल में मलाबार तट पर अरबी फारसी घोड़े आयात किए जाते थे। कालीकट बड़ा व्यापारिक केन्द्र था। अकबर के शासन काल में नौसेना विभाग था। आईने-अकबरी में उल्लेख है कि 40,000 नावें सिंध के व्यापार में लगी थी। औरंगजेब के काल में चटगांव में फिरंगियों के विरूद्ध युद्ध के लिए 200 जलपोतों का बेड़ा था।

- नटवर त्रिपाठी

उदयपुर की झीलें वर्षभर रहेंगी लबालब : मुख्यमंत्री

1690 करोड़ की देवास तृतीय व चतुर्थ परियोजना का शिलान्यास

उदयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा है कि राज्य सरकार योजनाओं, कार्यक्रमों तथा नवाचारों को केवल प्रारंभ ही नहीं करेगी, बल्कि समयबद्ध रूप से उन्हें पूरा भी करेगी। झीलों की नगरी उदयपुर में वर्ष पर्यन्त पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए देवास तृतीय एवं चतुर्थ परियोजना की शुरूआत की गई है। इससे उदयपुर की पेयजल की मांग पूरी होगी। मुख्यमंत्री एक मार्च को गोगुंदा में देवास परियोजना: तृतीय व चतुर्थ बांध एवं टनल निर्माण कार्य के शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार द्वारा राज्य में पेयजल आपूर्ति के लिए प्राथमिकता से कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने दो माह के अल्प कार्यकाल में महिलाओं को 450 रुपए में गैस सिलेण्डर, किसानों के लिए पीएम किसान सम्मान निधि 6 हजार रुपए से बढ़ाकर 8 हजार रुपए करने जैसे निर्णय किए हैं।

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार गरीब कल्याण की योजनाओं को धरातल पर क्रियान्वित कर रही है। केन्द्र सरकार द्वारा युवा, किसान, महिला तथा गरीब के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए उन्हें सशक्त बनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री भारत को दुनिया का बड़ा वेडिंग डेस्टिनेशन बनाने की भावना रखते हैं और इस दिशा में उदयपुर एक प्रमुख वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में उभरा है। उन्होंने बताया कि बांसवाड़ा के द्वीपों को भी पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। साथ ही, इस वर्ष के बजट (लेखानुदान) में महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट के लिए 100 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि देवास तृतीय परियोजना के तहत गोगुंदा तहसील के नाथियाथाल गांव के निकट 703 मिलियन घन फीट क्षमता के देवास तृतीय बांध का निर्माण करवाया जाएगा। इससे 11.04 किलोमीटर लंबी सुरंग का निर्माण कर आकोदड़ा बांध में पानी लाया जाएगा। आकोदड़ा बांध से पिछोला झील में जल अपवर्तन होगा। देवास चतुर्थ परियोजना में गोगुंदा तहसील के अंबावा गांव के निकट 390 मिलियन घन फीट क्षमता के देवास चतुर्थ बांध का निर्माण किया जाएगा। इसे 4.3 किलोमीटर सुरंग का निर्माण कर देवास तृतीय बांध से जोड़ दिया जाएगा। करीब 1 हजार 690 करोड़ की परियोजना को 44 माह में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इस अवसर मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0 के पोस्टर का विमोचन तथा गोगुंदा के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का लोकार्पण भी किया। उन्होंने देवास परियोजना के तृतीय एवं चतुर्थ चरण के मॉडल का अवलोकन भी किया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने गोगुंदा में महाराणा प्रताप की राजतिलक स्थली के दर्शन किए और मंशापूर्ण नीलकंठ महादेव मंदिर में विधिवत पूजा अर्चना की। कार्यक्रम में असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री कन्हैयालाल चौधरी, जल संसाधन मंत्री सुरेशसिंह रावत, जनजातीय क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, राजस्व मंत्री हेमंत मीणा, सांसद सीपी जोशी, चुन्नीलाल गरासिया, विधायक प्रतापलाल गमेती, ताराचंद जैन, उदयलाल डांगी, फूलचंद मीणा, अमृतलाल मीणा, सुरेन्द्रसिंह राठौड़ सहित स्थानीय जनप्रतिनिधिगण तथा बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

आरएसएमएम पेंशनर्स वेलफेयर सोसायटी की पहली आमसभा संपन्न

उदयपुर (ह.सं.। आरएसएमएम पेंशनर्स वेलफेयर सोसायटी की पहली आमसभा श्री झामेश्वर महादेव मंदिर में आयोजित की गई जिसमें भारी संख्या में सेवानिवृत्त कर्मचारी शामिल हुए। इस प्रथम आमसभा में सोसायटी के अध्यक्ष एल. सी. जोशी,

वरिष्ठ उपाध्यक्ष दिनेशकुमार माली, महासचिव हेमंत त्रिवेदी, वरिष्ठ सदस्य आर. सी. कुमावत, आर. एन. मौर्या, जोधपुर के सी. एस. शर्मा और एस. सी. माथुर ने अपने विचार रखे।

महासचिव त्रिवेदी ने बताया कि सोसायटी ने आरएसएमएम के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को आरजीएचएस और पेंशन योजनाओं का लाभ दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अध्यक्ष जोशी ने कहा कि सोसायटी का मुख्य उद्देश्य आरएसएमएम के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के हितों की रक्षा करना और उन्हें सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी सहायता प्रदान करना है। सोसायटी आने वाले समय में स्वास्थ्य शिविर, सामाजिक कार्यक्रम और अन्य गतिविधियों का आयोजन करेगी। शर्मा ने ईपीएफओ हायर पेंशन योजना पर जरुरी जानकारी दी एवं कहा कि सोसायटी को हमेशा गैर राजनैतिक रखा जाएगा। सभा को कोषाध्यक्ष सी. एल. पूर्बिया ने भी संबोधित किया।

इस दौरान वरिष्ठ सदस्यों ने कार्यकारणी सदस्यों का पगड़ी और उपरना से सम्मान किया। सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने सोसायटी के प्रयासों की सराहना की और आशा व्यक्त की कि यह उनके हितों की रक्षा करने के लिए आगे भी काम करती रहेगी। अंत में सभी सदस्यों ने सोसायटी के उपाध्यक्ष देवनारायण धाबाई द्वारा निशुल्क उनकी वाटिका उपलब्ध कराने पर आभार व्यक्त किया।

बाजार / समाचार

सुविवि- नंदवाना बने हिंदी विभागाध्यक्ष

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में एसोसियेट प्रोफेसर पद पर कार्यरत डॉ. नवीन नंदवाना ने विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यग्रहण किया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. नंदवाना वर्ष 2007 से ही इस विभाग में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। उनकी अब तक 20 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके संपादन में वर्ष 2013 से ही 'समवेत' नामक अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है जो कि वर्तमान में यूजीसी की केयर सूची में भी सम्मिलित है। डॉ. नंदवाना विगत वर्षों में विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में सहायक अधिष्ठाता, छात्र कल्याण रह चुके हैं। वर्तमान में वे विश्वविद्यालय के विविध केंद्रों और सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में बीए एसएफएस पाठ्यक्रम के संयोजक का दायित्व भी निभा रहे हैं। हिंदी साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए उन्हें कई संस्थाओं से सम्मानित हैं तथा वे देश की ख्यातनाम साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

उदयपुर की आर्या की सीएस में ऑल इंडिया सेकंड रैंक

उदयपुर (ह. सं.)। द इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरी ऑफ इंडिया की ओर से आयोजित सीएस प्रोफेशनल एवं सीएस एक्जीक्यूटिव दिसम्बर 2023 के परिणाम 25 फरवरी को घोषित हुए। परीक्षा में शहर की आर्या अग्रवाल ने 418 अंकों के साथ अखिल भारतीय स्तर पर दूसरा रैंक व उदयपुर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

आर्या ने बताया, अगर शुरू से ही आप अपने लक्ष्य के प्रति क्लीयर रहेंगे और बिना किसी तनाव के व फोकस होकर तैयारी करेंगे तो सफल होने से आपको कोई नहीं रोक सकता। मुझे मेरा लक्ष्य हमेशा से पता था। इसलिए तैयारी कभी छोड़ी नहीं। एग्जाम के दिनों में दोस्तों से मिलती भी थी और पढ़ाई भी करती थी। किसी तरह का तनाव नहीं रखा। यही मेरा सक्सेस मंत्र है। आर्या ने बताया कि उनके पिता अनिल अग्रवाल सीए हैं और एक प्राइवेट कंपनी में जीएम फाइनेंस हैं। वे सीएस इंटर भी कर चुके हैं। वहीं, चाचा सुशील अग्रवाल सीए और सीएस दोनों ही हैं। वे भिलाई स्टील प्लांट में असिस्टेंट जनरल मैनेजर के पद से रिटायर्ड हुए हैं। इसलिए पिता और चाचा से प्रेरणा लेकर व उनके मार्गदर्शन में ये मुकाम हासिल किया है। आर्या अभी गुड़गांव से आर्टिकलशिप के तहत इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग ले रही हैं।

यूडीए के पहले आयुक्त राहुल जैन ने पदभार संभाला

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर विकास प्राधिकरण के पहले आयुक्त भारतीय प्रशासनिक सेवा के 2019 बैच के अधिकारी राहुल जैन ने 29 फरवरी को पदभार ग्रहण किया। पदभार संभालने के बाद जैन ने प्राधिकरण कार्यालय की विभिन्न शाखाओं का निरीक्षण किया और प्रभारियों से कामकाज की जानकारी ली। इस दौरान जैन ने फाइलों के उचित संधारण के साथ प्रकरणों के त्वरित व समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिए। आयुक्त जैन ने अधिकारियों व कार्मिकों को समय पर कार्यालय पहुंचने एवं कार्यालय साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। उन्होंने परिसर में प्लास्टिक को पूर्ण निषेध करने एवं इसे नो प्लास्टिक जोन बनाने पर जोर दिया। इस दौरान ओएसडी जितेन्द्र ओझा, अधीक्षण अभियंता अनित माथुर, मुख्य लेखाधिकारी दलपतसिंह राठौड़, तहसीलदार अनुभव शर्मा आदि ने विभिन्न प्रभागों के कामकाज के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई।

रिलायंस फाउंडेशन ने की वंतारा की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। रिलायंस इंडस्ट्रीज और रिलायंस फाउंडेशन ने अपने वंतारा (जंगल का सितारा) कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की, जो भारत सहित विदेशों में भी घायल, शोषित और खतरे में पड़े जानवरों के बचाव, उपचार, देखभाल और पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक व्यापक पहल है। गुजरात में रिलायंस के जामनगर रिफाइनरी कॉम्प्लेक्स के ग्रीन बेल्ट के भीतर 3000 एकड़ में फैले वंतारा का लक्ष्य विश्वस्तर पर संरक्षण प्रयासों में अग्रणी योगदानकर्ताओं में से एक बनना है। जानवरों की देखभाल और कल्याण में अग्रणी विशेषज्ञों के साथ काम करके वंतारा ने 3000 एकड़ के विशाल स्थान को जंगल जैसे वातावरण में बदल दिया है, जो बचाई गई प्रजातियों के लिए प्राकृतिक, समृद्ध और हरे-भरे आवास की अनुभूति प्रदान करता है। वंतारा पहल, भारत में अपनी तरह की पहली पहल है, जिसे आरआईएल और रिलायंस फाउंडेशन के निदेशक मंडल के निदेशक अनंत अंबानी के उत्साही नेतृत्व में संकल्पित किया गया है। अंबानी जामनगर में रिलायंस के महत्वाकांक्षी नवीकरणीय ऊर्जा व्यवसाय का भी नेतृत्व कर रहे हैं और 2035 तक नेट कार्बन शून्य कंपनी बनने की रिलायंस की यात्रा का नेतृत्व करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

अनंत अंबानी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में, कार्यक्रम ने 200 से अधिक हाथियों, हजारों अन्य जानवरों, सरीसृपों और पक्षियों को असुरक्षित स्थितियों से बचाया है। इसने गैंडा, तेंदुआ और मगरमच्छ पुनर्वास सहित प्रमुख प्रजातियों में पहल की है। हाल ही में, वंतारा ने मैक्सिको, वेनेजुएला आदि देशों में विदेशी बचाव अभियानों में भी भाग लिया है। वंतारा कार्यक्रम के माध्यम से मध्य अमेरिकी चिड़ियाघर अधिकारियों के एक कॉल का जवाब देते हुए कई बड़े जानवरों को लाया गया है। ऐसे सभी बचाव और पुनर्वास मिशन भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सख्त कानूनी एवं नियामक ढांचे के तहत किए जाते हैं।

छह वर्षीय बच्चे के कॉर्नियल टीयर का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने छह वर्षीय बच्चे के कॉर्नियल टीयर का सफल ऑपरेशन किया है। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. ऋषि मेहता ने बताया कि राजसमन्द निवासी छह वर्षीय बच्चे के खेलते समय आँख में चिड़िया ने चोंच मार दी थी जिससे उसकी आँख की रोशनी चली गई। गत दिनों माता-पिता बच्चे को गीतांजली हॉस्पिटल लेकर आये। यहां बच्चे का कॉर्नियल टीयर का जटिल ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन करने वाली टीम में डॉ. ऋषि मेहता, एनेस्थीसिया विभाग से डॉ करुणा शर्मा, रेजिडेंट डॉ. अनुराग, डॉ. आकांक्षा, डॉ. मणि, डॉ. रेणु, डॉ. गीतिका, नर्स तरुणा माली शामिल थे। ऑपरेशन के बाद बच्चे की आँख की रोशनी पुन: पहले जैसे वापिस आ चुकी है।

संयुक्त निदेशक डॉ. शर्मा ने संभाला कार्यभार

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान सूचना एवं जनसंपर्क सेवा के वरिष्ठ अधिकारी संयुक्त निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने 24 फरवरी को उदयपुर के सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय में कार्यभार संभाल लिया है। वे राज्य सरकार के आदेशानुसार जयपुर से स्थानांतरित होकर उदयपुर आये हैं। जनसंपर्क सेवा वर्ष 2005 बैच के अधिकारी डॉ. शर्मा उदयपुर संभाग मुख्यालय सहित डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ जिलों में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग कार्यालयों में भी अपनी सेवाएं दे चुके है।

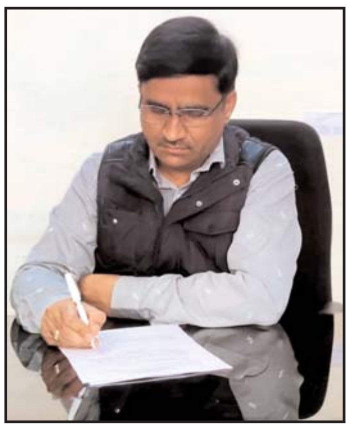

कार्यभार ग्रहण करने के दौरान उप निदेशक गौरीकांत शर्मा, सहायक जनसंपर्क अधिकारी विनय सोमपुरा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी वाचस्पति देराश्री, वरिष्ठ पत्रकार व किचन थैरेपी एक्सपर्ट डॉ. मदन मोदी, पत्रकार कपिल श्रीमाली, कपिल पारीक, प्रस्तर शिल्पकार हेमंत जोशी, सनातनी गजल-गीतकार कपिल पालीवाल, मनीष कोठारी, विप्लव जैन, सुनील व्यास, राजसिंह, ओमप्रकाश व कई मीडियाकर्मी मौजूद थे।

ईवास मॉड्यूलर किचन की शुरूआत

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की लीडिंग कंस्ट्रक्शन मैटेरियल कंपनी इंफ्रा. मार्केट द्वारा संचालित की जा रही ईवास ने शहर में अपने रणनीतिक विस्तार की शुरुआत की है। हाई क्वालिटी वाला समाधान प्रदान करने में अग्रणी कंपनी के रूप में, ईवास मॉड्यूलर किचन ग्राहकों की पसंद और सुविधा को देखते हुए लगातार बदलाव कर रहा है। भैरव बाग में स्लीकिफाई डेकोर स्टूडियो में संचालित ईवास मॉड्यूलर किचन स्टूडियो, विभिन्न स्वादों और प्राथमिकताओं के अनुरूप मॉड्यूलर किचन और वार्डरोब समाधानों की एक डाइवर्स रेंज प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है।

इंफ्रा. मार्केट के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, अभिजीत झावर ने कहा कि यह लोकल समुदाय को लेटेस्ट किचन सॉल्यूशन प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह कदम स्थानीय ग्राहकों की जरूरतों व इच्छाओं की प्रतिक्रिया के रूप में आया है, जो क्वालिटी मॉड्यूलर किचन और वार्डरोब की तलाश में तो हैं। किचन 10 साल की वारंटी के साथ है, जो बाजार में एक खास सुविधा है। ईवास ने स्थिरता और पर्यावरणीय प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए बेचे गए हर किचन लिए दो पेड़ लगाने का संकल्प लिया है। अगले 12-15 महीनों में पूरे भारत में 100 ईवास मॉड्यूलर किचन स्टूडियो खोलने की योजना है। ईवास डिजाइन प्रक्रिया शुरू करने से पहले आपकी खास आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को ध्यान से सुनने पर जोर देता है।

फार्म : 4
(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशक का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर
दिनांक : 29.02.2024

डॉ. तुक्तक भानावत
प्रकाशक के हस्ताक्षर

रंग कल्ला राठौड़

वीरवर श्री कल्लाजी राठौड़ अपनी असीम वीरता तथा सैन्य पटुता द्वारा इतिहास में अपना स्थान लिए हैं। जयमल राठौड़ के साथ इनकी शूरवीरता के उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलेंगे। चित्तौड़ के युद्ध में जिस बहादुरी से ये लड़े, अकबर भी हैरान हो गया।

युद्ध के दौरान छल से इनका सर कलम कर लेने पर भी शेष बचे रूंड द्वारा जो घोर युद्ध किया और दुश्मनों को खदेड़ते हुए सलूम्बर के पास जिस स्थान पर इनका रूंड गिरा वहां रूंडेड़ा गांव बसा जो इनकी स्मृति को जीवित किये है। चित्तौड़ में जहां इनका मुंड गिरा वहां भी इनका स्थान आमजन के लिए पूजनीय बना हुआ है। दोनों जगह कल्लाजी की आत्मा उनके सेवकों के शरीर में प्रवेश कर जनकल्याण के लिए समर्पित है।

प्रस्तुत स्तुति का कल्लाजी के गायक राव, भाट जब भी उनकी गादी लगती है उससे पूर्व बड़े ही ऊंचे उदात्त स्वर में हेला के रूप में आह्वान करते हैं। यह कल्लाजी के पदार्पण की सविनय अनुनय स्वरूप स्तुति है। इसे हेला देना कहते हैं। मैंने अनेक बार कल्लाजी के अनन्य सेवक सरजुदासजी के शरीर में कल्लाजी के पदार्पण के लिए हेला देते रामलाल को सुना है। अपने पुराने संग्रहों में यह पन्ना कहीं दब कर रह गया था सो अब इसका प्रकाशन किया जा रहा है जबकि सरजुदासजी और रामलाल दोनों ही इस दुनियां में शरीर रूप में नहीं हैं। - **म. भा.**

कला कीरत राव री हेलो कोस हजार।
बायां पकड़ बैठा करो, अरवड़िया आधार।। (1)
पत्तो लड़े पावड़िया ने जयमल महलां बीच।
राय आंगण कल्लो लड़े ने केसर हन्दाबीच।। (2)
कल्लो लड़े कबाण सूं ने माथे जस रो मोड़।
पृथ्वी बीच प्रगटिया रणे लिये राठोड़।। (3)
प्याला केसर पीवणा ने सांझ पड़े सुभियान।
मुआ उगारे मानवी कने काठा रंग कल्याण।। (4)
कल्लो जो छत्रगढ़ कांगड़े तो रहिया कमधज राज।
जाती जमीन सिसोदिया के कभी न राखी काय।। (5)
कल्लो कला सूं कड़िया लाखा दड़ थड़ लेर।
तीन पहर लग आसनी वो शीश पड़्या शमशीर।। (6)
पाथर यवना पाड़िया तो ढाला शाकर ढाण।
कल्लो हल्ला पर कोपियो तो रण डला रंड राण।। (7)
गेम्बर ढेणा गाइया खग जाटां खुरसाण।
कल्लो हल्ला पर कोपियो रण डसां रंड राण।। (8)
तोण हला अकबर तणा तो तेज झला तां ठौड़।
भला करण दु:ख भांजना थने रंग कल्ला राठौड़।। (9)
पांव धरे एक पावंडो तो हेले कोस हजार।
तो करण वेला आवे कल्ला दुनिया रा दातार।। (10)
कल्ले गरायो गारमो दीजो रीजवण रे हाथ।
पहले पावां श्री कल्याण ने पछे संग रो साथ।। (11)
नव कुली नाग रणेलियो जो खंड कीदो नाम।
छत्रगढ़ भागी जा दिनां तो श्री कमधज आया काम।। (12)
सम्वत् 1624 हड़त तोप हिन्दवाण।
भावज हन्दा बोलणा ने छप्पन दीनी छोड़।
गढ़ रणेलिये प्रगत्या तो चढ़ता गढ़ चित्तौड़।। (13)
पाडण पुर पाड़ो भयो जब्बर हिलोरो जाण।
राणे बीड़ो बांधियो तो कुण झेले हिन्दवाण।। (14)
कमधज मारा यूं कहे नां झेला हिन्दवाण।
छप्पन धरा रा रावजी तो असलां रा कुलभान।। (15)
घोड़ा पाकर घूंघरा ने भर यह भालो हाथ।
तो काछी आवे कूदत तो कल्ला मारू रे साथ।। (16)
अकबर पूछे नवाब ने कुण भरियो इक बाण।
तो बीरबल मांक्यो बादशाह कल्ला भरियो बाण।। (17)
जँह दिन कल्ला जन्म लियो जग में कीधौ नाम।
नव गज धरती दल चढ़े श्री कल्ला ही जाण।। (18)

नीलकंठ आईवीएफ की 21वीं वर्षगांठ पर गुलशन ग्रोवर ने की शिरकत

उदयपुर (ह. सं.)। नीलकंठ आईवीएफ की 21वीं वर्षगांठ और मेगा इनफर्टिलिटी जागरूकता कैंप में बॉलीवुड अभिनेता गुलशन ग्रोवर ने शिरकत की और इनफर्टिलिटी की समस्या से जूझ रहे दम्पतियों को समस्या का सामना करने और फर्टिलिटी विशेषज्ञ से सलाह लेने की बात पर ज़ोर दिया। उनका कहना था कि जब दंपति का माता-पिता बनने का सुख एक साथ है तो नि:संतानता की समस्या में भी पति-पत्नी दोनों को समाधान ढूँढना चाहिए और फर्टिलिटी विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए।

नीलकंठ आईवीएफ की निदेशक और और सीनियर प्रजनन विशेषज्ञ डॉ. सिमी सूद ने नीलकंठ आईवीएफ द्वारा नि:संतान दंपत्तियों की सेवा के 21 वर्ष पूरे करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने बताया कि हम बढ़ती जागरूकता से खुश हैं और इस बात की भी खुशी है कि बॉलीवुड अभिनेता गुलशन ग्रोवर समाज में इनफर्टिलिटी के बारे में जागरूकता फैलाने के उनके मकसद में उनका समर्थन कर रहे हैं। नीलकंठ आईवीएफ के वैज्ञानिक निदेशक डॉ. आशीष सूद ने कहा कि हमारा लक्ष्य अपने पेशेंट्स को सर्वोत्तम संभव फर्टिलिटी ट्रीटमंट प्रदान करना है। नीलकंठ आईवीएफ द्वारा विशेष छूट और ऑफर के साथ आयोजित होने वाले मेगा कैंप उन जोड़ों की मदद के लिए भी आयोजित किए जाते हैं जो उच्च लागत वाले फर्टिलिटी ट्रीटमंट का खर्च उठाने में असमर्थ हैं।

विपरीत परिस्थितियों ने मुझे लेखन के लिए शक्ति और प्रेरणा दी : डॉ. विद्याविन्दुसिंह

वनस्थली विद्यापीठ से पीएच.डी. हेतु शोध कर रही सुश्री सरिता पारीक की डॉ. विद्याविंदुसिंह के साथ कथा साहित्य में नारीपात्रों पर हुई बातचीत के प्रमुख अंश-

(1) सरिता - आपका लेखकीय प्रेरणा स्रोत कौन है ?

डॉ. विद्या - लेखन के लिए प्रेरणा कई स्रोतों से मिलती है। अपने भीतर की अनुभूतियों का दबाव पाठक के रूप में पढ़ी हुई किसी की रचना जब प्रभावित करती है तो प्रेरणा मिलती है कि हम भी अपनी अनुभूतियों को लिखकर व्यक्त करें। वातावरण का प्रभाव पड़ता है। परिस्थितियां भी प्रेरक होती हैं। मुझे इन सबके साथ ही अपने पिता का प्रोत्साहन और प्रेरणा मिली। अलग-अलग विधाओं के प्रेरक हमारे पूर्वज लेखक और गुरूजन रहे, साथ ही उनकी रचनाएँ भी प्रेरक बनीं।

(2) सरिता - आपके अनुसार पारिवारिक परिस्थितियां आपके लेखन के अनुकूल नहीं रहीं। ऐसी स्थिति में आपको लेखन के लिए किस शक्ति ने प्रेरित किया?

डॉ. विद्या - परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने पर तो लेखन के लिए अनुकूल अवसर होता है। विपरीत परिस्थितियों ने मुझे लेखन के लिए शक्ति और प्रेरणा दी। मैंने शिक्षा के लिए अनुकूल परिस्थिति न होने की बात की थी, लेखन के लिए नहीं।

(3) सरिता - एक लेखिका के रूप में सर्वाधिक संतुष्टि किस विधा पर लिखकर मिलती है?

डॉ. विद्या - जब जिस विधा में लिखा संतोष मिला कि में अपनी बात कह सकी। फिर भी बराबर लगता है कि अभी बहुत कुछ अभिव्यक्त होने से रह गया है।

(4) सरिता - हिंदी व अवधी दोनों भाषाओं में आपने पर्याप्त लेखन कार्य किया है। आपके हृदय के निकट कौन सी भाषा है?

डॉ. विद्या - मैं अवधी को हिंदी से अलग नहीं मानती क्योंकि लोकभाषायें अवधी की शक्ति हैं। अवधी मेरी मातृभाषा और हिंदी राष्ट्रभाषा है। दोनों से मेरा लगाव और आत्मीयता है।

(5) सरिता - आप संस्कृति व लोक संस्कृति को किस रूप में देखती हैं?

डॉ. विद्या - संस्कृति का फलक बहुत विस्तृत है। इसमें लोक और शास्त्र के साथ ही संपूर्ण सृष्टि के क्रियाकलाप आते हैं। जो लोक द्वारा व्यवहार में मिलता है वही लोकसंस्कृति है। वह सरल सहज और लोक कल्याणकारी होती है।

(6) सरिता - आपके प्रिय समकालीन लोकसाहित्यकार कौन-कौन हैं।

डॉ. विद्या - लोकसाहित्य वह है जिसमें रचनाकार का नाम लुप्त हो जाता है। इसमें समकालीनता की भी सीमा-रेखा नहीं खींची जा सकती क्योंकि यह जाने कब से सतत प्रवाहमान धारा जो वाचिक परम्परा या लोककंठ से प्रसारित होती रही है। इसलिए जिन्होंने भी यह साहित्य रचा या अनाम रहते हुए निरंतर रचते और युग की मांग के अनुसार उसमें जोड़ते या छोड़ते आ रहे है, यह सभी मेरे लिए प्रेरक हैं।

(7) सरिता - आपके अनुसार लोकचेतना, समय और काल के साथ परिवर्तित होती है?

डॉ. विद्या - लोकचेतना समय और परिस्थित तथा देश काल की मांग के साथ परिवर्तित होती रही है किंतु कुछ शाश्वत जीवन मूल्य निरंतर बने रहते हैं जिन्हें लोक नहीं बदलता क्योंकि वे लोकहित में होते हैं। ये मूल्य परम्परा और लोक व्यवहार में बराबर बने रहते हैं।

(8) सरिता - आप भारतीय संस्कृति और अवध संस्कृति में क्या आधारभूत अंतर महसूस करती हैं?

डॉ. विद्या - मैं तो अनुभव करती हूँ कि अवध की संस्कृति ही भारतीय संस्कृति की मूल चेतना में है क्योंकि यह श्रीराम और सीता की त्याग, तपस्या, सहनशीलता और मर्यादा की संस्कृति है।

(9) सरिता - लोकचेतना लोकसंस्कृति से किन स्तरों पर भिन्न है?

डॉ. विद्या - लोकचेतना लोकसंस्कृति से भिन्न उस समय होती है जब उसमें जड़ता या रूढ़ि का अनुभव होने लगता है। इन परिस्थितियों में लोक सचेत होकर स्वयं परिवर्तन की या सुधार की मांग करता है और उसकी यह चेतना लोकसाहित्य में अभिव्यक्त होती है। इसको लोक स्वीकार करता है। कभी यदि इस चेतना से लोकहित पर चोट लगने की आशंका होती है तो लोक इसका विरोध भी करता है और उसके समाधान की तलाश करके उसे स्वीकार योग्य भी बनाता है।

(10) सरिता - आपके उपन्यास के विषय-चयन का आधार क्या है?

डॉ. विद्या - मेरे कथा-साहित्य में विषय चयन पहले सोचा हुआ नहीं है। अपने पात्रों के जीवन-संघर्ष में जो परिस्थितियाँ आयीं उन्हीं को विषय बनाकर उनकी कथा को आगे बढ़ाते हुए लिखा। हाँ, मुझे उदात्त चरित्र ही अधिक आकर्षित करते हैं। इसलिए उनके चरित्र के उदात्त पक्ष को सहज भाव से मैंने आकार दिया है जो असम्भव नही लगते। ये हमारे बीच के जीते जागते पात्र हैं जिनके सुख-दु:ख से हम जुड़ते हैं।

(11) सरिता - आपके कथा संसार में मुख्य पात्र समाज व परिवार से संघर्ष करते हुए सशक्त नारी पात्र हैं तो हम क्या समझें कि आप संघर्ष को नारी नियति मानती हैं या प्रत्येक नारी को आप सशक्त बनता देखना चाहती हैं?

डॉ. विद्या - जी हाँ, आपने मेरी मानसिकता को समझ लिया है। मेरा मानना है कि संघर्ष नारी या पुरुष को शक्ति देते हैं। यह श्रीराम और सीता के संघर्ष और उनसे जूझते हुए भी हार न मानने के संकल्प को महत्व देते हैं। ये अपनी शक्ति की पहचान कराते हैं और तब नारी स्वयं को अबला नहीं समझती और स्वयं विजयी होकर सबके लिए प्रेरक बनने की क्षमता पाना चाहती है।

(12) सरिता - राम को आप किस रूप में देखती हैं?

डॉ. विद्या - राम जिस रूप में धरती पर आये और अपने आचरण से तेजस्वी भव्य व्यक्तित्व के साथ ही ईश्वर के रूप में सबके मन में युग-युग से बसे हुए हैं। वह रूप मेरे मन में भी समाया हुआ है और बराबर यही प्रार्थना है कि -

सीता राम चरन रति मौरे।
अनुदिन बढ़इ अनुग्रह तोरे।।

(13) सरिता - वर्तमान पीढ़ी का साहित्य से जुड़ाव कम होता जा रहा है और सोशल मीडिया से जुड़ाव बढ़ रहा है। इस पर आपका क्या मत है?

डॉ. विद्या - यह समय का प्रभाव है। इसे एकदम से नहीं बदला जा सकता किन्तु इस पर प्रतिबंध की भी आवश्यकता है। इसके माध्यम से भी साहित्य से नयी पीढ़ी जुड़ रही है पर उसके चयन के लिए स्वविवेक की आवश्यकता भी है कि वे क्या पढ़ें या ग्रहण करें या क्या लिखें।

(14) सरिता - युवा साहित्यकारों को क्या संदेश देना चाहती हैं।

डॉ. विद्या - वर्तमान पीढ़ी के साहित्यकार अपने समय की मांग को समझें। अपने राष्ट्र की संस्कृति की गरिमा का गौरवबोध रखते हुए पूरे विश्व के साहित्य से जो उपयोगी है, उसे ग्रहण करें, उसे अभिव्यक्ति दें। ठीक उसी प्रकार जैसे सूप का स्वभाव लेकर- 'सार सार को गहि रहै, थोथा देय उड़ाय।'

ऐसा करके ही भारतीय साहित्य को विश्व में पहले की तरह आदर मिलता रहेगा जिसके कारण वह विश्व गुरु की भूमिका में आज तक बना हुआ है।

सीआईआई राजस्थान के नए अध्यक्ष अरुण मिश्रा और उपाध्यक्ष संजय अग्रवाल ने पदभार संभाला

उदयपुर (ह. सं)। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) राजस्थान के अध्यक्ष के रूप में अरूण मिश्रा और उपाध्यक्ष के रूप में संजय अग्रवाल ने वर्ष 2024-25 का पदभार सम्भाला। श्री मिश्रा जिंक बिजनेस, वेदांता के सीईओ हैं और 1 अगस्त, 2020 से दुनिया के दूसरे सबसे बड़े जिंक एकीकृत उत्पादक और 5वें सबसे बड़े चांदी उत्पादक हिंदुस्तान जिंक का नेतृत्व कर रहे हैं। इसके बाद जून 2022 में श्री मिश्रा ने वेदांता जिंक इंटरनेशनल के संचालन और विकास का प्रबंधन करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी संभाली है, जिसकी खदानें और कंसन्ट्रेटर दक्षिण अफ्रीका में हैं। 1 अगस्त 2023 से, श्री मिश्रा को वेदांता लिमिटेड में कार्यकारी निदेशक के रूप में भी नियुक्त किया गया है। श्री मिश्रा इंटरनेशनल जिंक एसोसिएशन के पहले भारतीय अध्यक्ष हैं। उनके सक्षम नेतृत्व में हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड ने धातु और खनन क्षेत्र के तहत 238 कंपनियों के बीच एसएंडपी ग्लोबल कॉरपोरेट सस्टेनेबिलिटी असेसमेंट में उच्चतम सीएसए स्कोर 85 हासिल कर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। श्री मिश्रा ने आईआईटी, खड़गपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री के बाद न्यू साउथ वेल्स सिडनी विश्वविद्यालय से माईनिंग और बेनिफिसिएशन में डिप्लोमा और सीईडीईपी, फ्रांस से डिप्लोमा इन जनरल मैनेजमेंट किया। उन्हें गायन, गोल्फ खेलने और फुटबॉल का शौक है।

संजय अग्रवाल एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक (एयू एसएफबी) के प्रबंध निदेशक और सीईओ हैं। वे बैंकिंग के क्षेत्र में अग्रणी हैं और एयू लघु वित्त बैंक (एयू एसएफबी) के संस्थापक हैं। पहली पीढ़ी के उद्यमी के रूप में, वह 'बदलाव' की भावना का प्रतीक हैं, जिसने एयू एसएफबी को भारत का सबसे बड़ा लघु वित्त बैंक बनने के लिए प्रेरित किया - जो वित्तीय समावेशन और उत्कृष्टता का प्रतीक है। श्री अग्रवाल ने 1996 में एयू फाइनेंसर्स की स्थापना करके अपनी यात्रा शुरू की। दो दशकों से अधिक समय तक, इस संस्था ने ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में छोटे उद्यमियों और वंचित व्यक्तियों की वित्तीय जरूरतों को पूरा किया। आज, एक बैंक के रूप में छह साल से अधिक समय के बाद, एयू एसएफबी भारत के सबसे बड़े लघु वित्त बैंक के रूप में खड़ा है। बैंक का परिचालन 1,049 से अधिक बैंकिंग टचप्वाइंट तक फैला हुआ है।

वनवासी अंचल का गीड़ा खेल

- डॉ. दीपक आचार्य -

राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात का सरहदी इलाका वनवासी बाहुल्य बागड़ अंचल जहां संस्कृतियों, पुरातत्वों, इतिहासों और परम्पराओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा है, वहीं पुराने खेलों की शृंखला यहां विद्यमान रही है जो खेलकूद के लिहाज से इस अंचल को विशिष्टता प्रदान करती है। यहां के अधिकतर खेल मौसम और विविध पर्वों के साथ जुड़े हुए हैं। इनमें से एक रोचकता भरा खेल है गीड़ा। यह परम्परा से चला आ रहा है। इस खेल की समूची प्रक्रिया को देखकर यह कहें कि आज की 'हॉकी' इसका आधुनिक एवं परिष्कृत स्वरूप है तो बहुत कुछ सम्भव लगता है।

'गीड़ा' खेल खासकर सीमावर्ती क्षेत्र का लोकप्रिय खेल है जो गांव-ढाणियों तक में फैला हुआ है। इसे वनवासी बालक-बालिकाओं, तरुण-तरुणियों आदि द्वारा परस्पर समूह बनाकर उसी तर्ज पर खेला जाता है जिस तरह हॉकी। इसमें गेंद का काम करती है कपड़ों की चिन्दियों को सघनता से भर कर दबाई एवं सी हुई गठरी जिसे 'डोटी' कहा जाता है। इस गेंद को गोलमटोल आकार-प्रकार प्रदान कर अच्छी तरह धागे से सी लिया जाता है अथवा रस्सी बटेरी जाती है।

प्राचीनकाल का 'गीड़ा' आज की हॉकी स्टिक के आकार की स्थानीय स्तर पर वनों से प्राप्त लकड़ी होती है। प्राय: खजूर वृक्ष की रेशेदार चिकनी एवं स्टिकनुमा लकड़ी गीड़ा के रूप में प्रयुक्त की जाती है। यह गीड़ा हन्देड़ा, खाखरा आदि का भी हो सकता है जिसे स्टिक का आकार दे दिया जाता है। गांवों में सब जगह कहां मैदान? लेकिन वनवासियों के लिए तो उनके गांव ही उनके मैदान हैं जहां रह कर वे जीवन का खेल फक्कड़ शैली में खेलते हैं।

गांव के भीतर या बाहर के मैदाननुमा समतल भाग या गोचर भूमि को ही गीड़ा का मैदान बना लिया जाता है। यहां वनवासी अपनी अनूठी मस्ती के साथ गीड़ा खेलते हैं। यों यह परम्परा से ग्वालों-चरवाहों का खेल रहा होगा, मगर अब यह ग्राम्य संस्कृति का अंग बन चुका है। मैदान में गोल नेट एरिया की तरह इसमें किसी विशिष्ट स्थान का अंकन नहीं होता, मगर दोनों तरफ के छोरों पर पेड़, पत्थर आदि की सीमा का प्रतीक मान लिया जाता है। आज की हॉकी के गोल को इस खेल में 'बोड़ो' कहते हैं।

खेल आरम्भ होने से पहले मैदान में दोनों ही ओर बारह-बारह या इससे अधिक खिलाड़ी जमा हो जाते हैं। दोनों ही तरफ के कप्तान की भूमिका निभाने वाले एक-एक खिलाड़ी मैदान के बीचोंबीच आ जाते हैं। इन कप्तानों को ये लोग 'लेतू' या 'वारतू' कहते हैं जबकि खिलाड़ियों को 'भीरू' कहा जाता है। दोनों ही के मुखिया पांच बार अपने गीड़ा को परस्पर टकराते हैं। इस प्रक्रिया को 'कट्टिये' कहा जाता है। इसके बाद 'डोंटी' पर जोर आजमाकर खेल शुरू हो जाता है। फिर सिलसिला शुरू होता है 'बोड़ो' अर्थात् गोल करने का।

पूरी मस्ती के साथ झूमते हुए ये खिलाड़ी जब शोर के साथ 'गोड़ा' खेलने और 'बोड़ो' करने में जिस स्फूर्ति से उद्यत रहते हैं, तब कुलांचे भरते हुए हिरण भी इनके आगे बौने दिखाई देते हैं। दर्शक भी अपार आनन्द में भर कर इस खेल का नजारा देखते रहते हैं। गांवों में आज भी गीड़ा का खासा प्रचलन है और इसकी प्रतिस्पर्द्धाएं होती हैं। आसपास के गांवों की टीमों के बीच जब रोचक गीड़ा प्रतियोगिता होती है तब दोनों ही गांवों के निवासी उस तरह चारोंओर जमे रहते हैं जैसे खेलप्रेमी आजकल स्टेडियम में। वनवासी जीवन का मनोरंजक अंग बना हुआ यह खेल पीढ़ियों से चला आ रहा है।

खासकर सारे वनवासी अंचल में मकर संक्रांति पर इस खेल के दर्शन होते हैं और इस दिन यह खेल अपनी चरम सीमा पर होता है। आज भी ऐसे कई खेल वनवासी संस्कृति में रचे-बसे हैं और केवल प्राकृतिक उपहारों की मदद से ही खेले जाने वाले ये खेल यहां सदियों से लोकानुरंजन का साधन बने हुए हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार मेवाड़ अंचल में भी यह खेल बालकों में प्रचलित है। यहां इसे गीड़ा नहीं कहकर 'डोटा' कहते हैं। यह एक बड़ी गेंद अर्थात् दड़ी का रूप लिये होता है। इसे दड़ा भी कहते हैं। डोटे-दड़े को कपड़ों की कतरनों, कापों, चीन्दियों को एक-के-ऊपर-एक कट्ठा लपेटकर बनाया जाता है। इसके बाद सण की बनी सूतली या फिर कट्ठे पक्के धागों से इसे गूंथ दिया जाता है।

कलाप्रेमी शौकीन बच्चे इसे गूंथने के लिए रंगबिरंगे धागों की सहायता से कसते हुए गूंथते हैं। यह गूंथन आंकड़बांकड़ रूप में और कोई डिजाइन देते भी बनाई जाती है। डोटे को जिस लकड़ी से खेला जाता है उसे 'गेड़िया' कहते हैं। यह हॉकी स्टिक की ही तरह एक सिरे से मुड़ा हुआ होता है जो खांखरे यानी पलाश वृक्ष या फिर खजूर का होता है।

इसे दो दलों या पालों में बन्दकर खेला जाता है। एक-एक पाले में छह से बारह खिलाड़ी होते हैं। संक्रात का महीना इसे खेलने का खास समय होता है। संक्रांति पर तो गांव-गांव में बच्चे डोटा खेलते पाये जाते हैं। रात्रि को आग जलाकर इसे खेला जाता है। जब अग्नि की लपटों में डोटा जला-अधजला लपट देता खेला जाता है तो वह दृश्य बड़ा ही मनोहारी तथा आकर्षक लगता है जैसे सूरज के गोले से ही खेला जा रहा है।

संक्रांति से जुड़े अन्य खेलों में दड़ी से सम्बन्धित पड़ा-पाड़न्यो, मगरा डोटी, घोड़ी चढ़न्यो, गुल्ली-डण्डा, ताश के खेलों में दो मिलकर बेकी, तीन का तिकड़ी, चार का चौकड़ी, छह का छक्की खेल। कांकरों, पछेटों, कूंगसों तथा हप्पों के खेल। चिबटों के होरा-होरी जैसे खेल, लोड़ी सौत, बड़ी सौत, आंख मिचण्यो, ईडोरी पिडोरी जैसे मजेदारी एवं दिलचस्पी पैदा करने वाले उल्लेखनीय थे।

लेकिन समय के बदलते प्रवाह में हमारी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं का तेजी से लोप हुआ जा रहा है। ऐसे में आजादी पूर्व हमारे जीवनचक्र में जो विविध रंजन, अनुरंजन तथा रहन-सहन के तौर-तरीके थे वे आज की पीढ़ी के लिए तो अकल्पनीय तथा अविश्वसनीय ही हैं।

सराहनीय व्यक्तित्व

आजीवन सेवाव्रती बने रहे एडवोकेट फतहलालजी नागोरी

सेवा के कई कल्प विकल्प प्रकल्प हैं। कई राहें, तरीके और माध्यम हैं। सेवा गुप्त हो सकती है और प्रकट भी। महत्त्व बिना किसी अपेक्षा और आकांक्षा से की गई सेवा का है। पहचान बनाने, प्रसिद्धि प्राप्त करने, अभिनन्दित होने की मंशा से की गई सेवा फलित नहीं होती। सेवा को एक तरह की आराधना मानने वाले नित्य नियमबद्ध सेवा करने वाले आत्म सन्तोषी व्यक्ति सदा सुखी रहते हैं।

सेवा के बदले मेवा पाने वाले नौकरीपेशा लोगों की गिनती सेवक अथवा सेवादार के रूप में की जाती है पर उनकी गिनती अलग रूप से की जाती है। सेवा समाप्ति के बाद वे सेवानिवृत्त कहलाते हैं। कुछ लोग उसके बाद भी सेवा करने को उद्यत रहते हैं। उनमें कुछ तो बिना कुछ प्राप्ति की चाह लिए होते हैं जबकि कुछ बदले में पैसा-हाय पैसा की सनक लिए देखे गये हैं। यों सेवा का अर्थ तो निस्वार्थ सेवा ही होता है। कुछ के लिए सेवा ही परम धर्म है। बचपन में यह प्रार्थना बहुत होती थी-

वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्त्तव्य
मार्ग पर डट जायें।
पर सेवा पर उपकार में हम निज
जीवन सफल बना जायें।।

सच ही है, सेवा परम धर्म है। सेवा के बिना जीवन निरर्थक है। इसी विचारणा को सार्थक किया भीण्डर के एडवोकेट फतहलालजी नागोरी ने जो रिश्ते में मेरे मामा श्वसुर थे। उनका बचपन भी कोई समृद्धि लिए नहीं था। माता-पिता के निधन के कारण अपने अग्रज रतनलालजी उनके सहारा बने। उन्हीं की मात-पिता सम परवरिश में उनकी अच्छी शिक्षा हुई और सेवा की भावना का बीजारोपण भी उन्हीं के कारण हुआ। उन्हीं की बदौलत उदयपुर में आकर उन्होंने बी. कॉम. एल.एल.बी. कर वकालात के पेशे में कदम रखा।

रियासती काल में उदयपुर मेवाड़ की राजधानी रहा। तब मेवाड़ के सौलह प्रमुख तथा बत्तीस उप प्रमुख ठिकाने थे जो सौलह-बत्तीसी के नाम से जाने जाते। इनमें भीण्डर प्रमुख ठिकाने में था। यहीं फतहलालजी का 13 मई 1934 को जन्म हुआ और 89 वर्ष की उम्र में 06 अक्टूबर 2023 को अपनी जीवन यात्रा पूरी की।

अपनी वकालात के दौरान फतहलालजी राजनीति में सक्रिय रहे। सन् 1960 के दशक में वे मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया के सम्पर्क में आए और कांग्रेस के कार्यकर्त्ता की सकारात्मक भूमिका लिये रहे। उनके एडवोकेट पुत्र कुमार राजेश ने बताया कि 1970 के दशक में स्वतंत्रता सेनानी माणिक्यलाल वर्मा, संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य बलवन्तसिंह मेहता, भूरेलाल बया, भोगीलाल पण्ड्या, हीरालाल देवपुरा आदि कर्मठ स्वतंत्रता सेनानियों के साथ कार्य करते अपनी अलग पहचान बनाई। वे नगरपालिका, ओसवाल सभा, बार एसोसिएशन जैसी और भी अनेक सामाजिक एवं धार्मिक सेवाभावी संस्थाओं में उच्च पदासीन रहे।

नागोरीजी अच्छे विचारक तथा सदैव हंसमुख रहने वाले श्रेष्ठ इंसान थे। अपने परायों के साथ उनका सहज सौहार्द, आपसी भाईचारा तथा मेलमिलाप रहता था। वे कहते भी कि इस अर्थकारी युग में अनर्थ का फैलाव ही अधिक व्यापक रूप लिए दिखाई दे रहा है ऐसे में सेवा की भावना बहुत कम देखने को मिलती है।

लेकिन नागोरीजी का यह सौभाग्य रहा कि यह सेवाभाव उनमें बचपन से ही अपने अग्रज रतनलालजी से विरासत में मिला जो प्रतिदिन ही अपनी कमाई का आंशिक हिस्सा एक गुल्लक में डाला करते और कहते कि यह गुल्लक भी परिवार के अन्य सदस्यों की तरह ही एक सदस्य के रूप में है। चूंकि गुल्लक भोजन नहीं करती अत: उसमें जो पैसा इकट्ठा होता वे धर्मार्थ उसे खर्च करते। ऐसे करते भीण्डर में उन्होंने श्मशानघाट पर विश्रान्तिगृह एवं लकड़ी घर बनवाया।

फतहलालजी ने गुप्त और प्रकट, दोनों रूपों में अपने द्वारा अर्जित राशि का सदुपयोग किया। अनेक बेसहारा, विधवा एवं जरूरतमंद लोगों की सहायता कर जहां उनको जीवन निर्माण का सम्बल दिया वहीं अनेक छात्र-छात्राओं को पढ़ाई-लिखाई के लिए प्रेरित कर उनके अर्थ-सहयोगी बने। कइयों को दावापूरी में सहयोग कर उनका वाजिब हक दिलाया और कइयों को बेघर कंगाल होते बचाया।

फतहलालजी के अन्य दो भाई नक्षत्रमलजी, मदनलालजी भी कुशल व्यापारी थे लेकिन फतहलालजी ने अपने परिवार में अपने पुत्र कुमार राजेश तथा दूसरे पुत्र संजय को भी एडवोकेट बनाया। यही नहीं, दोनों पुत्रों के अलावा दोनों पौत्रों वैभव तथा शुभांकर को भी एडवोकेट बनाकर अपनी यशस्वी परम्परा को प्रतिष्ठित किया।

एडवोकेट संजय ने बताया कि पिताश्री ने हर दृष्टि से परिवार के प्रत्येक सदस्य को योग्य जीवन जीने के संस्कार दिये। जब वे कोर्ट जाने की तैयारी करते तब कुमार राजेश ही उनके कपड़ों की ठीक से देखभाल करते। मुख्यत: वे उनका कोट ठीक से सम्भालते हुए उसकी दोनों जेबें पर्याप्त मात्रा में ड्राईफ्रूट से भर देते। संध्या को लौटते समय दोनों जेबें खाली मिलतीं। दिन में जो भी आता, उनसे उस मेवा का प्रसाद पाकर प्रसन्न होता।

नागोरीजी का सम्पर्क बड़ा विस्तार लिए था। वे उस हर व्यक्ति के कार्यक्रम में अवश्य भाग लेते जो उन्हें आमंत्रित करता और जब किसी कार्यक्रम में वे नहीं बुलाये जाते तब भी वे जाते और अपनी शुभकामना व्यक्त कर अपनी भावनानुसार रोकड़ राशि प्रदान कर खुश होते। ऐसा भी होता जब वे सहयोगार्थ चैक काटकर सम्बन्धित व्यक्ति को बुलाते और वह चैक प्रदान कर अपने को धन्य मानते।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

मुहावरों के ठाठमठाठ-

सैंकड़ों मुहावरों से जड़ी है हिन्दी की भाल बिन्दी

उसके नौ दो ग्यारह होते ही उसने नेला पे देला लगादी। रोना कूटना पुरोहितजी के घर उसके तो रामजी राजी हैं। तू कितना ही टेढ़ा-टेढ़ा चल, टेढ़ी ऊंगली से घी नहीं निकलता है। बारह साल का अचार है कुछ नहीं बिगड़ा। राजा दशरथ का शव चौदह साल तेल में रखा कुछ नहीं बिगड़ा।

मुफ्त का चन्दन घिस मेरे लाला, राज का तेल खोले में झेल। सन्तोषी सदा सुखी, अन्त लोभी महादुखी। आसमान में अटकते खजूर पे लटकते भी तुमने अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मारने में ही होशियारी समझी। आदमी जोरू का गुलाम बने पर अपनी अस्मिता पर तो जरा भी आंच न आने दे।

अच्छी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति की पांचों उंगलियां घी में रहती हैं। तेरे से अब पड़ गया पाला मुफ्त का चंदन घिस मेरे लाला। इधर रामजी की चिड़िया रामजी का खेत और उधर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। आदमी तभी तक पहचानता है जब वह धरती पर रहता है बाकी तो तोते की तरह आंख बदलने में ही शगुन समझता है। राम सबका रखवाला है। वह कीड़ी को कण और हाथी को मण देकर सबका पेट भरता है।

यहां आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं, कभी अंगूर खट्टे हैं तो कभी खरबूजे खरबूजे को देखकर रंग बदलते हैं। कहीं दाल में ही काला है तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती है। कोई डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाता है तो कोई लोहे के चने चबाता है। कोई घर बैठा रोटियां तोड़ता है तो कोई दाल-भात में मूसलचन्द बन जाता है। गरीबी में जब आटा गीला होता है, तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है।

जहां-जहां धुंआ उठा है वहां-वहां आग है। जहां-जहां बाजा है वहां-वहां राग है। बाकी तो सबका पता लग जाता है पर ग्राहक और मौत कह कर नहीं आते। बिना मांगे मिल जाती है पर मौत मांगे नहीं मिलती। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से कुछ नहीं मिलता। देखोन कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा लेकर भानुमती ने अपना कुनबा ही जोड़ लिया। अकस्मात ही घटती है ऐसी घटना जैसे कौए का बैठना और डाल का टूटना। तीरथ जाये बिना क्या तो भक्ति और क्या मुण्डन? समय बड़ा बलवान ठीकरी घड़े को फोड़ दे। मुंह में राम बगल में छुरी रखने वाले के घट-घट में राम से नहीं है दूरी। आम्र पकने पर फल देता है और घोटने से विद्या तथा खोदने से पानी मिलता है।

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते हैं। आटे में नमक तो चल जाता है पर गेहूं के साथ घुन भी पिस जाता है। अपना हाल तो बेहाल है, ये मुंह और मसूर की दाल है। गुड़ खाते हैं तथा गुलगुले से परहेज करते हैं और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं। कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है, कभी ऊंट के मुंह में जीरा है, कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है। किसी के अभी दूध के दांत नहीं टूटे हैं तो कोई यहां पर दूध के धुले हैं।

लातों के देव बातों से नहीं मानते। मूरख पानी नहीं छानते। भैंस के आगे तन्दूरा बजता रहे, हाथी चलता रहे, कुत्ते भौंकते रहें, गीदड़ भभकी देते रहें, घड़ीयाल आंसू बहाते रहें, एक कान से दूसरे कान निकालते रहें, गधे के सींग आते रहें, फर्जी फर्ज निभाते रहें, सगा दगा देता रहे; सब समझ में आता है ठीक उसी तरह जैसे रात भर रटा सुबह सफा।

कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है, तो किसी की चमड़ी जैसे मेदे की लोई है। किसी को छठी का दूध याद आ जाता है, तो कहीं दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है। फिर दूध का दूध पानी का पानी हो जाता है।

-म. भा.

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।